सांध्य दैनिक
4PM
जिद...सच की
www.4pm.co.in www.facebook.com/4pmnewsnetwork @Editor_Sanjay YouTube @4pm NEWS NETWORK
● वर्ष: 9 ● अंक: 191 ● पृष्ठ: 8 ● लखनऊ, गुरुवार, 17 अगस्त, 2023
मूल्य ₹ 3/-

मेहमान भी तीन दिन मछलियों की तरह बदबू करने लगते हैं।
-बेंजामिन फ्रैंकलिन

11 महीने बाद बुमराह ने बहाया नेट्स... 7 | लाल किले से देश को संबोधन या... 3 | भाजपा का हिंदुत्व से कोई लेना... 2

राहुल से लेकर आजाद तक के बयान पर छिड़ी सियासी बहस

गुलाम नबी ने कहा- सारे मुस्लिमों के पूर्वज हिंदू थे

» सोशल मीडिया पर आने लगी प्रतिक्रिया

4पीएम न्यूज नेटवर्क

नई दिल्ली। इस समय भारत में 2024 में होने वाले लोकसभा चुनाव को लेकर सियासी बयानो का दौर जारी है। जहां प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अपने 15 अगस्त को दिए गए संबोधन को लेकर विपक्ष के निशाने पर आ गए हैं। वहीं नेहरू संग्रहालय के नाम को पीएम के नाम पर करने को लेकर भी भाजपा सरकार की चारों तरफ आलोचना हो रही है। अभी ये मामले शांत भी हुए थे कि पूर्व कांग्रेसी नेता गुलाम नबी आजाद ने इस्लाम पर बयान देकर नई बहस छेड़ दी है। कांग्रेस का साथ छोड़कर डेमोक्रेटिव प्रोग्रेसिव आजाद पार्टी बनाने वाले जम्मू-कश्मीर के पूर्व मुख्यमंत्री गुलाम नबी आजाद के बयान के बाद चारों तरफ से घिर गए हैं।

हालांकि उनके बयान पर किसी की प्रतिक्रिया नहीं आई है। पर उनके समर्थन व आलोचना में सोशल मीडिया प्लेटफार्म भरे पड़े हैं। कुछ उनके बयान को सियासी बता रहे हैं तो कुछ कह रहे हैं वह गलत बयानबाजी करे रहे है। बात कुछ भी की गई हो पर जम्मू-कश्मीर पूर्व मुख्यमंत्री ने भारत में धर्मों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर अपनी टिप्पणी से नए सिरे से बहस छेड़ दी है। पूर्व कांग्रेस नेता गुलाम नबी आज़ाद ने मुसलमानों की उत्पत्ति पर अपनी विवादास्पद टिप्पणी से खलबली मचा दी और कहा कि हिंदू धर्म इस्लाम से भी पुराना है। विभिन्न सोशल मीडिया प्लेटफार्मों पर प्रसारित एक वीडियो में पूर्व कांग्रेस नेता को अपना दृष्टिकोण साझा करते हुए दिखाया गया है कि इस देश में सभी व्यक्ति शुरू में हिंदू धर्म से जुड़े थे। डोडा जिले के थाथरी क्षेत्र में एक सभा को संबोधित करते हुए, आज़ाद ने टिप्पणी की, लगभग 1,500 साल पहले, इस्लाम का उदय हुआ, जबकि हिंदू धर्म की जड़ें प्राचीन हैं। कुछ मुसलमान बाहरी भूमि से चले गए होंगे और मुगल सेना में भाग लिया होगा। परिणामस्वरूप, हिंदू धर्म से धर्मांतरण हुआ। इस्लाम भारतीय उपमहाद्वीप में हुआ। 14 अगस्त को डोडा जिले में एक सभा को संबोधित करते हुए, पूर्व कांग्रेस नेता ने कहा, हमारे पास कश्मीर का उदाहरण है, 600 साल पहले कश्मीर में कोई मुस्लिम नहीं था, कश्मीरी पंडितों को इस्लाम में परिवर्तित कर दिया गया था। न केवल भारत में बल्कि दुनिया में इस्लाम 1500 साल पहले आया, हिंदू धर्म बहुत पुराना है। डेमोक्रेटिक प्रोग्रेसिव आजाद पार्टी के प्रमुख ने कहा, इस्लाम बाहर से आया होगा, मुग़ल सेना के 10-20 लोग थे। बाकी लोग हिंदू-सिख से धर्म परिवर्तन कर चुके हैं।

नेहरू का नाम उनके काम से है : राहुल

नेहरू संग्रहालय का नाम बदलकर प्रधानमंत्री संग्रहालय रखे जाने पर कांग्रेस सांसद राहुल गांधी ने कहा कि नेहरू सिर्फ अपने नाम से नहीं, बल्कि अपने काम से जाने जाते हैं। नाम बदलने के विवाद पर राहुल गांधी की टिप्पणी भाजपा और कांग्रेस के बीच तीखी जुबानी जंग के एक दिन बाद आई है, जहां कांग्रेस ने कहा था कि भाजपा ने एन की जगह पी लगा दी है, जो पार्टी की क्षुद्रता और चिड़चिड़ापन का प्रतीक है। बीजेपी ने पलटवार करते हुए कहा कि दरबारी सिर्फ विलाप कर रहे हैं।

» कांग्रेस ने नेहरू संग्रहालय का नाम बदलने पर भाजपा को घेरा

लद्दाख जाते समय हवाई अड्डे पर कहा, नेहरू जी की पहचान उनके करम है, उनका नाम नहीं। 14 अगस्त से नेहरू मेमोरियल संग्रहालय और पुस्तकालय का आधिकारिक तौर पर नाम बदलकर प्रधान मंत्री संग्रहालय और पुस्तकालय सोसायटी कर दिया गया है। कांग्रेस महासचिव जयराम रमेश ने कहा ने इस पर कहा कि मोदी के पास भय, जटिलताओं और असुरक्षाओं का एक बड़ा बंडल है, खासकर जब यह हमारे पहले और सबसे लंबे समय तक सेवा करने वाले प्रधान मंत्री की बात आती है। भाजपा ने कहा कि संग्रहालय अब नेहरू से हटकर सभी प्रधानमंत्रियों पर केंद्रित है जबकि नेहरू संग्रहालय में किसी अन्य प्रधानमंत्री को जगह नहीं मिली। कांग्रेस नेता शशि थरूर ने कहा कि अन्य प्रधानमंत्रियों को जगह देने के लिए पहले प्रधानमंत्री का नाम हटाना छोटी बात है। थरूर ने कहा, आप इसे नेहरू मेमोरियल प्राइम मिनिस्टर्स म्यूजियम एंड लाइब्रेरी कहना जारी रख सकते थे। संग्रहालय के उपाध्यक्ष ए सूर्य प्रकाश ने कहा कि नए संग्रहालय शोकेस में नेहरू के योगदान को कम नहीं किया गया है।

▶ अपने इस्तीफे के बाद से आजाद खुले तौर पर कांग्रेस नेतृत्व की आलोचना करते रहे हैं।

भारत हमारी जमीन है यहां कोई बाहर से नहीं आया

वायरल हो रहे वीडियो में आजाद ने कहा, हमने राज्य का निर्माण हिंदू, मुस्लिम, दलित, कश्मीरियों के लिए किया है। यह हमारी जमीन है, यहां कोई बाहर से नहीं आया है। मैंने संसद में कई चीजें देखी हैं जो नहीं होतीं, आप तक पहुंचें। हमारे एक साथी सांसद ने कहा कि कुछ लोग बाहर से आए हैं। मैंने इनकार कर दिया। हमारे हिंदुस्तान में इस्लाम सिर्फ 1500 साल पुराना है। हिंदू धर्म बहुत पुराना है, इसलिए जब वे थे तो उनमें से 10-20 लोग बाहर से आए होंगे मुगलों के समय में उनकी सेना में बाकी सभी लोग भारत में हिंदू से मुस्लिम बन गए और हमारा कश्मीर इसका उदाहरण है। सभी मैंने कहा कि सभी इसी धर्म में पैदा हुए हैं..। अपने इस्तीफे के बाद से आज़ाद खुले तौर पर कांग्रेस नेतृत्व की आलोचना करते रहे हैं। उन्होंने पहले अपना विचार व्यक्त किया था कि 2013 में राहुल गांधी द्वारा कांग्रेस उपाध्यक्ष की भूमिका संभालने के दौरान परामर्शी ढांचे को कमजोर कर दिया गया था। आज़ाद ने अनुभवी वरिष्ठ नेताओं को दरकिनार करने और पार्टी के मामलों का प्रबंधन करने के लिए एक अनुभवहीन और अधीनस्थ मंडली के उद्भव पर भी अफसोस जताया।

रक्षा संबंधी स्थायी समिति के सदस्य नामित किए गए राहुल

कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी की लोकसभा सदस्यता बहाल होने के कुछ दिनों बाद उन्हें रक्षा मामलों संबंधी संसद की स्थायी समिति का सदस्य नामित किया गया। लोकसभा बुलेटिन के अनुसार, कांग्रेस सांसद अमर सिंह को भी समिति में सदस्य बनाए गए हैं। आम आदमी पार्टी के नवनिर्वाचित लोकसभा सदस्य सुशील कुमार रिंकू को कृषि, पशुपालन और खाद्य प्रसंस्करण समिति के लिए नामित किया गया है। रिंकू ने हाल ही में जालंधर लोकसभा उपचुनाव जीता था और वह संसद के निचले सदन में आप के एकमात्र सदस्य हैं। राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (राकांपा) के पीपी मोहम्मद फैजल को उपभोक्ता मामले, भोजन और सार्वजनिक वितरण समिति के लिए नामित किया गया है। इसी साल मार्च में अयोग्य ठहराए जाने से पहले तक राहुल गांधी रक्षा संबंधी स्थायी समिति के ही सदस्य थे।

भाजपा एक नंबर की डरपोक

» शिवपाल ने कार्यकर्ताओं में भरा जोश, बोले- सरकार की बताएं खामियां

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

बांदा। लोकसभा चुनाव नजदीक आते देख वरिष्ठ सपा नेता शिवपाल सिंह यादव पुराने रौ में आने लगें हैं। उन्होंने सपाइयों में जोश भरते हुए कहा कि सपा का हर कार्यकर्ता लड़ाकू व संघर्षशील है। वह सड़क पर उतरेंगे तो भाजपाई अपने आप सुधर जाएंगे। कार्यकर्ताओं से कहा कि भाजपा डरपोक नंबर-एक है। जब हम सड़क पर आ जाएंगे तो यह अपने आप सुधर जाएंगे।

विपक्षी पार्टियों के इंडिया गठबंधन को लेकर कहा कि मिलजुल कर चुनाव लड़ा जाएगा। भाजपा को यूपी से हराकर भेजेंगे। पार्टी के अन्य वक्ताओं ने बूथ अध्यक्षों पर फोकस रखते हुए उनके मान सम्मान की बात कही। केंद्र व प्रदेश सरकार की खामियां और पूर्व सपा सरकार की उपलब्धियां जन-जन तक पहुंचाने को कहा। वरिष्ठ सपा नेताओं ने बांदा व चित्रकूट जिले के कार्यकर्ताओं से सीधे संवाद कर 2024 लोक सभा चुनाव में कामयाबी के गुर बताए। सपा के शिविर में मीडिया को प्रवेश नहीं दिया गया और सपाइयों को भी फोटो खींचने से मनाही थी। पंडित जवाहर लाल नेहरू महाविद्यालय मैदान में लोक जागरण अभियान के तहत बनाए गए विशाल पंडाल में बांदा व चित्रकूट जिले के सपाईयों का जमावड़ा लगा। यहां आए सपा के राष्ट्रीय महासचिव व पूर्व मंत्री शिवपाल सिंह यादव ने भाजपा को आड़े हाथों लेते हुए कहा कि सरकार समाजवादी पार्टी के कार्यकर्ताओं का उत्पीड़न कर रही है। फर्जी मुकदमे लगाए जा रहे हैं। अब उनका कार्यकर्ता चुप बैठने वाला नहीं है। हौसला बढ़ाते हुए कहा कि वह सड़क पर उतरेंगे तो भाजपाई अपने आप सुधर जाएंगे। वहीं सुधीर पवार ने किसानों को लेकर सरकार की बदनियती बताई। पूर्व सांसद व राष्ट्रीय महासचिव विशम्भर प्रसाद निषाद ने भाजपा को जातीय जनगणना से बचने को लेकर आड़े हाथों लिया।

भाजपा को परास्त करने के लिए विभीषणों की तलाश करें

वरिष्ठ सपा नेता व पूर्व मंत्री रामअचल राजभर ने कहा कि चुनाव में जीत का दारोमदार बूथ अध्यक्षों पर है। बूथ व सेक्टर अध्यक्ष इधर-उधर चुनाव संपर्क में जाने की बजाय अपने क्षेत्र में रहे। सपा प्रबुद्ध महासभा राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रोफेसर वी पांडेय ने कहा कि रामराज समाजवाद से आएगा। भगवान श्रीराम ने कोलभील, निषाद व दलितों को साथ में लेकर सोने की लंका में रहने वाले रावण को परास्त किया। रावण पूंजीवादी व्यवस्था का पोषक था। उसी व्यवस्था पर भाजपा पर चल रही है। भाजपा को परास्त करने के लिए विभीषणों की तलाश करें।

इस मौके पर वरिष्ठ सपा नेता लाल जी वर्मा जिलाध्यक्ष मधुसूदन कुशवाहा, बबेरू विधायक विशम्भर सिंह यादव, ईशान सिंह लवी, शेखर शर्मा, अशोक दीक्षित, मोहन साहू, मदन गोपाल टंका, चित्रकूट जिलाध्यक्ष शिवशंकर सिंह यादव, पूर्व जिलाध्यक्ष अनुज यादव, पूव सांसद बाल कुमार पटेल, पूर्व विधायक वीर सिंह, गुलाब खां समेत सभी कार्यकर्ता मौजूद रहे।

दलबदलू नेता वोटों के सौदागर : उमा भारती

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

डिंडौरी। मध्यप्रदेश की पूर्व मुख्यमंत्री एवं भाजपा की फायर ब्रांड नेत्री उमा भारती ने दलबदलू नेताओं को लेकर बड़ा बयान दिया है। उमा भारती एक तरफ दल बदलने वाले नेताओं को सौदागर कह रही हैं तो वहीं दूसरी तरफ कांग्रेस से भाजपा में आए ज्योतिरादित्य सिंधिया की तरफदारी करते हुए भी नजर आ रही हैं। दरअसल उमा भारती डिंडौरी स्थित वीरांगना अवंती बाई के जन्मदिन के अवसर पर उनके बलिदान स्थल पहुंची थीं। डिंडौरी जिले का नाम रानी अवंतीबाईपुरम करने के मामले में उमा भारती ने इसे राज्य सरकार का विषय बताया।

दल बदल को लेकर उमा भारती का कहना है कि जो इस पार्टी से उस पार्टी में जाते रहते हैं वो दरअसल नेता ही नहीं होते हैं बल्कि सौदागर होते हैं। ज्योतिरादित्य सिंधिया के दल बदलने को लेकर उमा भारती ने कमलनाथ पर ठीकरा फोड़ दिया। उमा भारती ने कहा कि जैसे कांग्रेस ने ज्योतिरादित्य सिंधिया को बगावत करने पर मजबूर किया, ठीक वैसे ही उनकी दादी विजयाराजे सिंधिया को भी बगावत के लिए कांग्रेस ने मजबूर किया था। उमा भारती सिंधिया के बगावत को दलबदल से अलग विषय मानते हुए यह दलील दे रही हैं कि चुनाव के समय जो नेता टिकट के लिए इस पार्टी से उस पार्टी में शामिल होते हैं वह गलत है। पन्ना जिले से कुसुम महदेले के विधानसभा उम्मीदवारी के सवाल पर उमा भारती कुछ भी कहने से बचते नजर आईं। उमा भारती ने मध्यप्रदेश के आगामी विधानसभा चुनाव में भाजपा की रिकॉर्ड जीत का दावा किया है।

बहुसंख्यकवाद से नहीं चलाया जा सकता देश : महबूबा मुफ्ती

» बोलीं- रघुवंश के सिद्धांत को न तोड़ा जाए

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

जम्मू। पीडीपी अध्यक्ष महबूबा मुफ्ती ने कहा कि वह बहुत खुश हैं कि सुप्रीम कोर्ट अनुच्छेद 370 मामले में सुनवाई कर रहा है। इस दौरान उन्होंने भगवान राम का भी जिक्र किया। वह बुधवार को नई दिल्ली में सुप्रीम कोर्ट में अनुच्छेद 370 को निरस्त करने को चुनौती देने वाली याचिकाओं पर चल रही सुनवाई में शामिल होने के लिए पहुंचीं। इस दौरान उन्होंने मीडिया से रूबरू होते हुए कहा कि देश को बहुसंख्यकवाद के आधार पर नहीं चलाया जा सकता।

यह देश संविधान के अनुसार चलेगा। महबूबा ने भगवान राम और उनके रघुवंश का जिक्र करते हुए कहा, हमें अभी भी इस देश

के सर्वोच्च न्यायालय पर भरोसा है। मेरी है कि देश रघुकुल रीत सदा चली आई, प्राण जाए पर वचन ना के सिद्धांत पर विश्वास करता है। उन्होंने कहा कि हिंदू पौराणिक कथाओं में भगवान राम से संबंधित रघुवंश इस सिद्धांत में विश्वास करते थे कि आपको अपना वादा कभी नहीं तोड़ना चाहिए। भले ही इसके लिए आपको अपना जीवन खोना पड़े।

दिल्ली की सातों सीटों पर लड़ने के अलका के दावे को कांग्रेस ने किया खारिज

लांबा के बयान पर आप ने की आपत्ति

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। दिल्ली में बुधवार को संगठन की मजबूती और आगामी चुनावों को लेकर कांग्रेस के शीर्ष नेताओं की बैठक हुई। बैठक से बाहर आने के बाद अलका लांबा ने कहा कि करीब तीन घंटे तक यह बैठक चली। जिसमें राहुल गांधी, कांग्रेस प्रमुख मल्लिकार्जुन खरगे, केसी वेणुगोपाल और दीपक बाबरिया मौजूद रहे। अलका ने कहा कि पार्टी ने हमें आगामी लोकसभा चुनाव के लिए तैयारी करने को कहा है। यह निर्णय लिया गया है कि दिल्ली में सभी सात सीटों पर चुनाव लड़ेंगे।

वहीं, इसके कुछ देर बाद कांग्रेस ने अलका के बयान का खंडन करते हुए कहा कि बैठक में ऐसे किसी मुद्दे पर चर्चा नहीं हुई है। अलका ने आगे कहा कि पार्टी के पास सात महीने बचे हैं और सभी कार्यकर्ताओं को

सातों सीटों के लिए तैयारी करने को कहा गया है। ऐसे में माना जा रहा है कि सत्ता पक्ष से लड़ने के लिए बना विपक्ष का गठबंधन इंडिया दिल्ली में कमजोर पड़ सकता है। अलका लांबा के इस बयान के बाद दिल्ली में आम आदमी पार्टी के मंत्री सौरभ भारद्वाज ने कहा कि कांग्रेस ने दिल्ली की सभी सात लोकसभा सीटों पर चुनाव लड़ने की बात की है। हमारा केंद्रीय नेतृत्व इस पर फैसला करेगा। हमारी राजनीतिक मामलों की समिति और इंडिया दल एक साथ बैठक करेंगे और इस पर चर्चा करेंगे। वही कांग्रेस ने अलका लांबा के बयान का खंडन किया। दिल्ली कांग्रेस प्रभारी दीपक बाबरिया ने कहा कि ऐसे मुद्दों पर बयान देने के लिए अलका लांबा अधिकृत नहीं हैं।

अकेले चुनाव लड़ने पर गठबंधन का कोई मतलब नहीं : आप

अलका लांबा के बयान के बाद आम आदमी पार्टी ने कहा कि अगर कांग्रेस ने दिल्ली में अकेले लोकसभा चुनाव लड़ने का मन बना लिया है तो उसके साथ गठबंधन करने का कोई मतलब नहीं है। कांग्रेस और आप विपक्ष के गठबंधन इंडिया का हिस्सा है। आप की मुख्य प्रवक्ता प्रियंका कक्कड़ ने कहा कि कांग्रेस नेता अलका लांबा के बयान के बाद उनका शीर्ष नेतृत्व इंडिया की मुंबई में होने वाली बैठक में भाग लेने पर फैसला करेगा।

भाजपा का हिंदुत्व से कोई लेना देना नहीं

» दिग्विजय बोले- मप्र में कांग्रेस की सरकार बनने पर बजरंग दल पर बैन नहीं

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

भोपाल। मध्य प्रदेश में इस साल के अंत में विधानसभा चुनाव है। इससे पहले प्रदेश में हिंदुत्व के मुद्दे पर सियासत गरमा गई है। अब पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह ने कहा है कि प्रदेश में कांग्रेस की सरकार बनने पर बजरंग दल पर बैन नहीं लगाएंगे, लेकिन असामाजिक तत्वों या बदमाशों को छोड़ा भी नहीं जाएगा। सिंह ने कहा कि बजरंग दल में भी अच्छे लोग हो सकते हैं। उन्होंने हिंदुत्व को लेकर भाजपा पर जमकर निशाना साधा।

कहा कि मैं भाजपा के नेताओं से अच्छे तरीके से अपने धर्म का पालन करता हूं। भारत देश हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई सभी का है। उन्होंने कहा भाजपा का हिंदू और हिंदुत्व से कोई लेना देना नहीं है। दिग्विजय सिंह ने कहा कि हिंदुत्व को लेकर सावरकर के बोल हैं। उन्होंने खुद कहा था हिंदू शब्द का हिंदुत्व से कोई मतलब नहीं है। पूर्व सीएम ने कहा कि हिंदू धर्म कभी खतरे में नहीं रहा। 550 साल मुस्लिमों ने राज किया, लेकिन हिंदू खतरे में नहीं रहा। भाजपा नेता देश को बांटना बंद करें। भाजपा का यही काम है फूट डालो और राज करो। यह लोग मणिपुर में भी यहीं कर रहे है। उन्होंने अंग्रेजों से यही सीखा है। दिग्विजय सिंह ने भाजपा सरकार पर जमकर निशाना साधा। उन्होंने कहा कि यहां पर नौकरी में भ्रष्टाचार, ठेके में भ्रष्टाचार यहां तक कि धार्मिक कार्य में भ्रष्टाचार हुआ है। दिग्विजय सिंह ने सीएजी रिपोर्ट का हवाला दिया। उन्होंने कहा कि राम मंदिर निर्माण की जमीन खरीदने में भ्रष्टाचार किया गया। राम मंदिर के लिए हजारों करोड़ रुपये इकट्ठे किए गए, लेकिन आज तक हिसाब नहीं दिया। सिंहस्थ में भ्रष्टाचार, महाकाल में भ्रष्टाचार और अब राम मंदिर में भ्रष्टाचार किया जा रहा है।

भाजपा ने राम मंदिर में किया भ्रष्टाचार

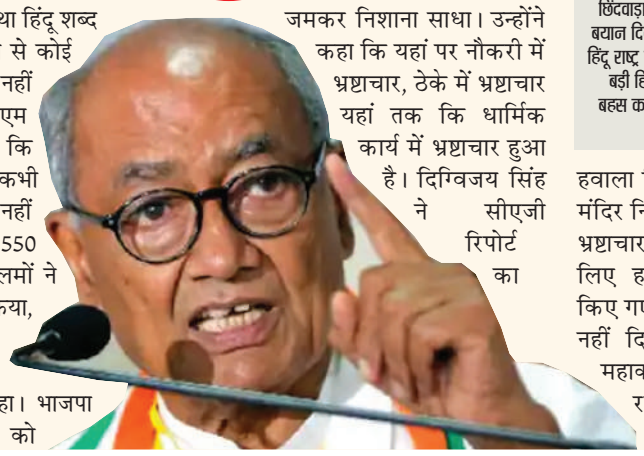

कमलनाथ के बयान को तोड़ मरोड़कर पेश किया

कमलनाथ के बयान को तोड़ मरोड़कर पेश किया गया। देश में बहुमत हिंदुओं का है, फिर हिंदू कैसे खतरे में हो गया। उन्होंने कहा कि हमारा भरोसा देश के संविधान में है। बता दें कमलनाथ ने बागेश्वर धाम के धीरेंद्र शास्त्री की छिंदवाड़ा में कथा के समय हिंदू राष्ट्र को लेकर बयान दिया था कि देश में 82प्रतिशत तो हिंदू हैं। हिंदू राष्ट्र बनाने की क्या बात है। विश्व की सबसे बड़ी हिंदू आबादी अपने देश में है। इसमें कोई बहस का मुद्दा नहीं है। यह कहने की बात नहीं है, यह तो आंकड़े बताते हैं।

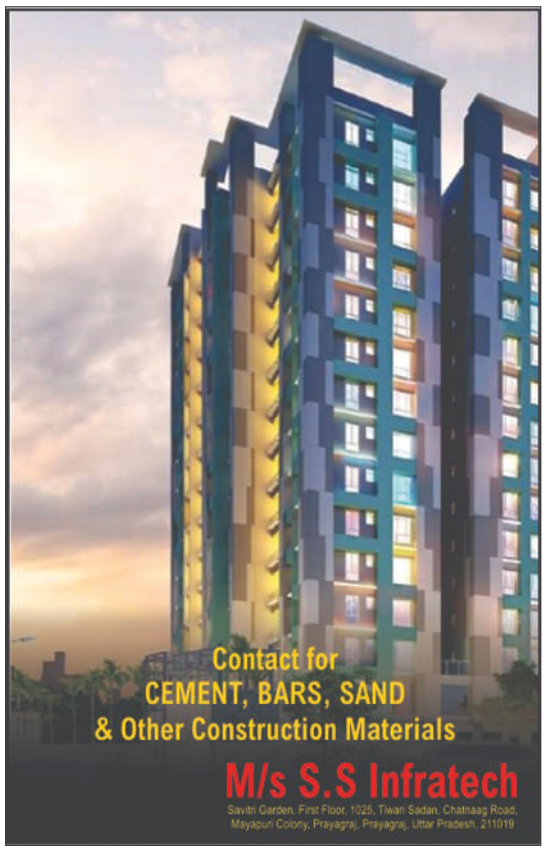

लाल किले से देश को संबोधन या चुनावी भाषण!

स्वतंत्रता दिवस समारोह पर मोदी के बयानों पर सियासत

- विपक्ष बोला -पीएम का आखिरी विदाई भाषण
- कांग्रेस बोली- खोखले वादों व झूठ का पिटारा
- भाजपा 24 के लोस चुनाव की तैयारी में जुटी
- अगली रणनीति तैयार करने लगी बीजेपी

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर लाल किले से प्रधानमंत्री द्वारा दिए गए भाषण पर सियासत शुरू हो गई है। विपक्ष ने इसे चुनावी भाषण करार दिया है तो भाजपा ने मोदी के भाषण के बाद आगामी चुनाव पर रणनीति बनाने की तैयारी शुरू कर दी है। गौरतलब हो कि पीएम मोदी ने अपने भाषण में भ्रष्टाचार, परिवारवाद व तुष्टिकरण को समाप्त करने की अपील की थी। विपक्षी दलों ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के स्वतंत्रता दिवस संबोधन को खारिज करते हुए इसे झूठ, अतिशयोक्तियों और खोखले वादों से भरा चुनावी भाषण, करार दिया और दावा किया कि यह मोदी का लाल किले की प्राचीर से विदाई भाषण है। कांग्रेस ने कहा कि 'पिछले नौ वर्षों में प्रधानमंत्री मोदी की विफलताओं को तीन शब्दों 'दुर्नीति, अन्याय और बदनीयती' के रूप में समझा जा सकता है।

विपक्ष ने कहा कि बयानबाजी और दिखावा अब उस सच्चाई को छिपा नहीं सकता, जो पूरे देश के सामने स्पष्ट है। प्रधानमंत्री ने मुद्रास्फीति का दोष बाकी दुनिया पर मढ़ने की कोशिश की, जबकि हकीकत यह है कि संप्रग सरकार की अवधि की तुलना में कच्चे तेल की कीमतें काफी कम हैं। कांग्रेस ने कहा कि स्वतंत्रता दिवस पर देश को एकजुट करने के बजाय प्रधानमंत्री ने केवल अपने बारे में और अपनी छवि की बात की और आगे की चुनौतियों को स्वीकार नहीं किया। कांग्रेस नेता ने कहा कि प्रधानमंत्री ने भले ही यह कहा हो कि 'अमृत काल' में भारत माता का कायाकल्प किया जा रहा है, लेकिन पूरे देश ने मणिपुर में उनका हश्र देखा है, जहां महिलाओं पर क्रूरतापूर्वक अत्याचार हो रहे हैं। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री का यह कहना भी असत्य है कि देश में युवाओं के लिए अवसरों की कमी नहीं है। रमेश ने आरोप लगाया, ''स्थानीय संस्कृतियों और भाषाओं पर हमले और सबसे कमजोर लोगों, विशेषकर दलितों, आदिवासियों और अल्पसंख्यकों के खिलाफ भीड़ की हिंसा को वैध बनाकर देश की विविधता को निरर्थक बनाया जा रहा है। मोदी सरकार, भाजपा और कट्टर नेतृत्व वाले संघ परिवार द्वारा मीडिया पर नियंत्रण और सोशल मीडिया के दुरुपयोग से देश का सामाजिक ताना-बाना छिन्न-भिन्न हो गया है।''

देश में इस वर्ष के अंत में कई राज्यों में विधानसभा चुनाव होने है। वहीं अगले वर्ष 2024 में लोकसभा चुनाव भी होने वाले है। इन चुनावों के मद्देनजर बीजेपी ने भी तैयारी शुरू कर दी है। इसके तहत पांच राज्यों में होने वाले विधानसभा चुनावों को देखते हुए भाजपा कोई कसर नहीं छोड़ना चाहती है। इस बैठक में बीजेपी की केंद्रीय चुनाव समिति चुनावी रणनीति और पैसले लेगी। बता दें कि आमतौर पर ये बैठक चुनाव की तारीखों की घोषणा के बाद आयोजित की जाती है। मगर इस बार लाल किले की प्राचीर से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की घोषणा के बाद चुनाव समिति की बैठक आयोजित करने का फैसला किया गया है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में केंद्रीय चुनाव समिति की बैठक बुलाई गई है। इस बैठक में चुनावी तैयारियों को लेकर चर्चा होगी। ये बैठक बेहद अहम है क्योंकि इसमें पार्टी अध्यक्ष जेपी नड्डा, गृहमंत्री अमित शाह के अलावा केंद्रीय चुनाव समिति के नेता भी उपस्थित होंगे। इस बैठक में बीजेपी की केंद्रीय चुनाव समिति चुनावी रणनीति और पैसले लेगी। बता दें कि आमतौर पर ये बैठक चुनाव की तारीखों की घोषणा के बाद आयोजित की जाती है। मगर इस बार लाल किले की प्राचीर से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की घोषणा के बाद चुनाव समिति की बैठक आयोजित करने का फैसला किया गया है। यानी बीजेपी पहले से ही चुनावी तैयारियां करने के मूड में है। राजस्थान और छत्तीसगढ़ दोनों ही राज्यों में कांग्रेस की सरकार है और दोनों ही राज्यों में इस वर्ष के अंत तक चुनाव होने है। वहीं मध्यप्रदेश में कांग्रेस कड़ी टक्कर भाजपा को दे सकती है, जिसे देखते हुए भाजपा कोई कसर छोड़ना नहीं चाहती है। कर्नाटक में मिली हार के बाद पार्टी पहले से ही तैयार हो गई है और किसी तरह का जोखिम उठाने से बच रही है। इस बैठक में पार्टी मंथन कर सकती है कि कांग्रेस पार्टी जो भी चुनावी वादे करेगी उसका तोड़ कैसे निकाला जाएगा। कांग्रेस पार्टी ने कर्नाटक चुनावों में जो वादे किए थे उन पर भी मंथन हो सकता है। ऐसे में बीजेपी इस बैठक में उन वादों का तोड़ निकालने की कोशिश करेगी। बीजेपी का उन सीटों पर भी मंथन होगा जहां पार्टी की पैठ मजबूत नहीं है।

पीएम केवल शेखी बघारते हैं : माकपा

मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी (माकपा) महासचिव सीताराम येचुरी ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी पर स्वतंत्रता दिवस के अपने संबोधन के दौरान शेखी बघारने का आरोप लगाया। येचुरी ने साथ ही भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के नेतृत्व वाली केंद्र सरकार के प्रदर्शन को लेकर एक तुलना सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर पोस्ट की। सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर किये एक पोस्ट में येचुरी ने भारत की अर्थव्यवस्था, मानव विकास सूचकांक और शिशु मृत्यु दर की तुलना अन्य देशों से की। उन्होंने कहा, ''लालकिले से मोदी के शेखी बघारने को लेकर अन्य देशों के साथ आंकड़ों की तुलना करने की जरूरत है।

पीएम मोदी के भाषण में अहंकार : खरगे

अगले वर्ष लाल किले पर ध्वजारोहण करने और अपनी उपलब्धियों का रिपोर्ट कार्ड देने संबंधी प्रधानमंत्री के दावे पर कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने कहा कि अगले साल मोदी अपने आवास पर ही झंडा फहराएंगे। उन्होंने यह भी कहा कि प्रधानमंत्री के इस दावे में अहंकार दिखाई देता है कि अगले साल वह फिर लाल किले से देश को संबोधित करेंगे। कांग्रेस ने कहा, ''हर आदमी यही कहता है कि बार-बार जीतकर आऊंगा, लेकिन हराना जिताना मतदाताओं के हाथ में है। वह अगले साल झंडा फहराने की बात कर रहे हैं, यह अहंकार है।'' उन्होंने तंज कसते हुए कहा, ''वह (प्रधानमंत्री) अगले साल झंडा फहराएंगे, लेकिन अपने घर पर।'' आम आदमी पार्टी (आप) ने दावा किया कि मोदी ने लाल किले की प्राचीर से अपना विदाई भाषण दिया। आप नेता सौरभ भारद्वाज ने आरोप लगाया, ''मेरा मानना है कि यह प्रधानमंत्री

मोदी का विदाई भाषण था। उन्होंने पिछले 10 साल में किये गये सभी कार्यों को गिनाने की कोशिश की, लेकिन उल्लेख करने लायक कुछ नहीं था।'' आप की वरिष्ठ नेता और दिल्ली की मंत्री आतिशी ने कहा, ''किसी को प्रधानमंत्री के 10 साल के रिपोर्ट कार्ड को समझने के लिए उनके भाषण को सुनने की जरूरत नहीं है। उनके काम से साफ है कि वह नाकाम रहे हैं।

समारोह में न पहुंचकर कांग्रेस ने दिखाई अपनी मानसिकता : अनुराग

भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने कांग्रेस पर निशाना साधते हुए कहा कि उसके अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे के लाल किले पर स्वतंत्रता दिवस समारोह में भाग नहीं लेने से पता चलता है कि मुख्य विपक्षी दल वंशवाद से आगे नहीं सोच सकता। समारोह में शामिल नहीं होने के लिए खरगे द्वारा समय की कमी और यातायात प्रतिबंधों का हवाला देने पर भाजपा ने कहा कि कांग्रेस अपने कार्यक्रम के समय में फेरबदल कर सकती थी। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने स्वतंत्रता दिवस के मौके पर लाल किले की प्राचीर से राष्ट्र को संबोधित किया। इस मौके पर खरगे के लिए आरक्षित कुर्सी खाली रही। खरगे राज्यसभा में विपक्ष के नेता भी हैं। खरगे ने पहले अपने आवास पर और बाद में कांग्रेस मुख्यालय में राष्ट्रीय ध्वज फहराया। अगर मैं वहां जाता, तो यहां (कांग्रेस मुख्यालय) के कार्यक्रम में शामिल नहीं हो पाता। सूचना एवं प्रसारण मंत्री अनुराग ठाकुर ने संवाददाताओं से कहा कि खरगे का लाल किले पर स्वतंत्रता दिवस समारोह में भाग नहीं लेना कांग्रेस की मानसिकता को दर्शाता है। उन्होंने कहा, देश के लोगों को राक्षस कह कर...कांग्रेस ने दिखाया कि वह लोकतंत्र में लोगों को किस प्रकार देखती है। जब हमारे देश की मुख्य विपक्षी पार्टी के नेता, जो राज्यसभा में नेता प्रतिपक्ष भी हैं, 77वें स्वतंत्रता दिवस पर नहीं आते हैं, तो आप कल्पना कर सकते हैं कि कांग्रेस की मानसिकता क्या है। ठाकुर ने कहा, जब वे सत्ता में थे, तो उनके विचार भिन्न थे। आज, जब वे विपक्ष में बैठे हैं, तो सत्ता के लिए उसी तरह तड़प रहे हैं, जैसे पानी से बाहर होने पर मछली तड़पती है। वहीं कांग्रेस नेता पवन खेड़ा ने 'एक्स (पूर्व में ट्विटर)' पर एक पोस्ट में खरगे का बचाव किया। खेड़ा ने अपने पोस्ट में कहा कि भाजपा इस बात से नाराज है कि खरगे लाल किले पर मोदी के भाषण के दौरान मौजूद नहीं थे, लेकिन क्या प्रधानमंत्री महसूस करते हैं कि उनकी ''मार्ग व्यवस्था'' के कारण कांग्रेस नेता के लिए ध्वजारोहण के लिए समय पर पार्टी मुख्यालय तक पहुंचना असंभव हो जाता।

वंशवाद की राजनीति के खिलाफ है, तो 'प्रति परिवार एक व्यक्ति विधेयक' लाए सरकार : डेरेक ओ ब्रायन

तृणमूल कांग्रेस के राज्यसभा सदस्य डेरेक ओब्रायन ने सरकार को चुनौती दी कि यदि वह वंशवाद की राजनीति के खिलाफ है, तो 'प्रति परिवार एक व्यक्ति विधेयक' लाए। मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी (माकपा) के महासचिव सीताराम येचुरी ने 'एक्स (पूर्व में ट्विटर)' पर अपने पोस्ट में भारत की अर्थव्यवस्था, मानव विकास सूचकांक और नवजात मृत्यु दर की तुलना अन्य देशों से करते हुए सरकार पर निशाना साधा। भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी सांसद बिनय विश्वम ने मोदी के भाषण को राजनीतिक और जुमलेबाजी करार दिया। समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष अखिलेश यादव ने कहा कि मोदी को 'परिवारवाद' की बात करते समय सबसे पहले उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की ओर देखना चाहिए। यादव का इशारा आदित्यनाथ के गोरखपुर की गोरक्षपीठ के महंत भी होने की ओर माना जा रहा है। बिहार के उप मुख्यमंत्री और राष्ट्रीय जनता दल (राजद) के नेता तेजस्वी यादव ने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी के इस बयान से अहंकार की बू आती है कि वह अगले साल लाल किले से तिरंगा फहराएंगे। उन्होंने कहा, ''प्रधानमंत्री भूल गये हैं कि कुछ भी स्थायी नहीं होता। देश ने अनेक शासक देखे हैं और सभी किसी न किसी तरह सत्ताविहीन हो गये।

नेहरूवादी विरासत को कोई नहीं मिटा सकता - जयराम

नेहरू मेमोरियल का नाम बदलने को लेकर जयराम रमेश ने अपने ट्विटर हैंडल पर लिखा, आज से एक प्रतिष्ठित संस्थान को नया नाम मिल गया है, विश्व प्रसिद्ध नेहरू मेमोरियल संग्रहालय और पुस्तकालय (एनएमएमएल) प्रधानमंत्री स्मारक संग्रहालय और पुस्तकालय बन गया है। पीएम मोदी के पास डर और असुरक्षा का एक बड़ा पिटारा है, खासतौर पर जब हमारे पहले और सबसे लंबे समय तक सेवा करने वाले प्रधानमंत्री की आती है, उनका एकमात्र एजेंडा नेहरू और नेहरूवादी विरासत को नकारना, विकृत करना, बदनाम करना और नष्ट करना है, उन्होंने एन को मिटाकर उसकी जगह पी डाल दिया है, वह पी वास्तव में संकीर्णता और अपमानित करने के लिए है। जयराम रमेश ने अपने ट्वीट में आगे लिखा कि इस सबके बावजूद वो स्वतंत्रता आंदोलन में नेहरू के महान योगदान और भारतीय राष्ट्र-राज्य की लोकतांत्रिक, धर्मनिरपेक्ष, वैज्ञानिक और उदार नींव के निर्माण में उनकी महान उपलब्धियों को कभी भी छीन नहीं सकते, इन सभी पर अब मोदी और उनके समर्थक हमला कर रहे हैं। लगातार हमले के बावजूद, जवाहरलाल नेहरू की विरासत दुनिया के सामने जीवित रहेगी और वो आने वाली पीढ़ियों को प्रेरित करते रहेंगे।

आपके पास दस वर्ष थे, अब तक क्या किया : सिब्बल

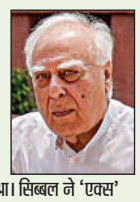

राज्यसभा सदस्य कपिल सिब्बल ने स्वतंत्रता दिवस पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के भाषण में भ्रष्टाचार के जिक्र पर तंज करते हुए पूछा कि ''अच्छे दिन'' कहां हैं और उनके पास भ्रष्टाचार को समाप्त करने के लिए दस वर्ष थे, तो क्या काम हुआ। सिब्बल ने 'एक्स' (पूर्व में ट्विटर) पर पोस्ट किया, '' 15 अगस्त पर प्रधानमंत्री आपने कहा , हमें भ्रष्टाचार समाप्त करना है। आपके पास करीब-करीब दस वर्ष थे। क्या हुआ ? अच्छे दिन कहां हैं। भुला दिया ? मंहगाई आयातित है। हमारी सब्जियां नदारद हैं।'' सिब्बल ने कहा, '' अगले पांच वर्ष स्वर्णिम काल। किसके लिएए गरीब, दलित, अल्पसंख्यक या...?

जिद... सच की

Sanjay Sharma
editor.sanjaysharma
@Editor_Sanjay

नेहरू और अटल से सीखने की जरूरत

आज पूर्व पीएम अटल बिहारी बाजपेई की पुण्य तिथि है। आज ही उनकी पार्टी भाजपा की मोदी सरकार ने पंडित जवाहर लाल नेहरू के नाम से स्थापित संग्रहालय का नाम बदल पीएम के नाम पर कर दिया । गलत किया या सही ये बहस का विषय हो सकता है पर कभी भाजपा के शिखर पुरुष रहे अटल बिहारी बाजपेई ने पीएम रहते अपने कक्ष से पूर्व प्रधानमंत्री की तस्वीर हटने पर अपने कार्यालय के अधिकारियों को फटकार लगाई थी , इससे उलट आज पूर्व पीएम नेहरू की आलोचना में मर्यादा भी तोड़ी जाने लगी है। राजनीति में विपक्षी दलों के नेताओं के साथ मतभेद आम बात है। एक दल का नेता दूसरे दल के नेता की आलोचना करता है। इसके बावजूद उसके गुणों की प्रशंसा भी समान रूप से करता है। देश के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू से लेकर अटल बिहारी वाजपेयी उसी श्रेणी के नेता है। हालांकि, मौजूदा दौर की राजनीति में ऐसे नेता बेहद कम हो चुके हैं। मौजूदा राजनीतिक दौर में आलोचना के साथ ही भाषा के स्तर में गिरावट साफ नजर आती है।

इस बात पर का जिक्र प्रधानमंत्री रहते हुए अटल बिहारी वाजपेयी ने भी किया। अटल बिहारी वाजयेपी ने सदन में देश के पहले प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू का जिक्र करते हुए इस पर चिंता जताई थी। अटल बिहारी वाजपेयी ने कहा था कि ऐसा नहीं था कि नेहरू जी से मतभेद नहीं थे। उनका कहना था कि मतभेद चर्चा में भी गंभीर रूप से उभर कर सामने आते थे। वाजपेयी ने एक बार पंडित नेहरू से कह दिया था कि आपका एक मिलाजुला व्यक्तिव है। आपमें चर्चिल भी है और चेंबरलेन भी। पंडित नेहरू इस बात पर नाराज नहीं हुए थे। उस भाषण के बाद शाम को पंडित नेहरू की अटल बिहारी वाजपेयी से किसी समारोह में मुलाकात हुई। अटल से मिलने पर नेहरूजी ने कहा कि आज तो बड़ा जोरदार भाषण दिया। इसके बाद हंसते हुए चले गए। वाजपेयी ने अपने भाषण में कहा था कि आजकल ऐसी आलोचना करना दुश्मनी को दावत देना है। तत्कालीन पीएम वाजपेयी का कहना था कि यदि आजकल लोगों की ऐसी आलोचना कर दी जाए तो लोग बोलना बंद कर देंगे। अटल बिहारी वाजपेयी का कहना था कि क्या एक राष्ट्र के नाते हम लोग मिलकर काम नहीं कर सकते। अटल वाजपेयी के मन में पंडित नेहरू को लेकर विशेष सम्मान था। पंडित नेहरू शुरू से ही अटल बिहारी वाजपेयी के भाषण कौशल के मुरीद थे। पंडित नेहरू के निधन के बाद अटल बिहारी वाजपेयी ने कहा था, आज एक सपना खत्म हो गया। एक गीत खामोश हो गया। एक लौ हमेशा के लिए बुझ गई। यह एक चिराग की ऐसी लौ थी जो पूरी रात जलती थी। हर अंधेरे का सामना किया और हमे रास्ता दिखाया। वाकई आज के नेताओं को नेहरू व अटल दोनों सीख लकेर देश हित में सोचना चाहिए।

“ राजनीति में विपक्षी दलों के नेताओं के साथ मतभेद आम बात है। एक दल का नेता दूसरे दल के नेता की आलोचना करता है। इसके बावजूद उसके गुणों की प्रशंसा भी समान रूप से करता है। देश के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू से लेकर अटल बिहारी वाजपेयी उसी श्रेणी के नेता है। हालांकि, मौजूदा दौर की राजनीति में ऐसे नेता बेहद कम हो चुके है।

(इस लेख पर आप अपनी राय 9559286005 पर एसएमएस या info@4pm.co.in पर ई-मेल भी कर सकते हैं)

डिजिटल भारत में कृत्रिम बुद्धिमत्ता के यक्ष प्रश्न

सुरेश सेठ

भारत में जब तरक्की, विकास और उपलब्धि की गणना होती है तो देश के बहुत कम समय में दुनिया में एक इंटरनेट शक्ति बन जाने की बात आती है। रिकॉर्ड समय में डिजिटल भारत बना दिया गया। अगर रोबोट, कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) और ब्राडबैंड डिजिटल प्रसार की बात होती है तो देश आज किसी भी नवसंचार चेतना के अग्रदूत से कम नहीं माना जाता है। आजकल दुनियाभर में चैट जीपीटी का बोलबाला है। कहा जा रहा है कि चैट जीपीटी ने इन्सान को इतनी कृत्रिम बौद्धिक शक्ति प्रदान कर दी है जिससे संकट पैदा हो गया है कि शायद उसे अब मौलिक चेतना और बौद्धिक विकास की जरूरत ही नहीं पड़ेगी। जब हर प्रश्न का जवाब गढ़ा-गढ़ाया चैट जीपीटी पर हो तो कोई अपनी बुद्धि को कष्ट क्यों देगा? यही नहीं, चैट जीपीटी को नेताओं को उनके भाषण, कवियों को उनकी कविताओं के उचित शब्द, नाटकों के संवाद और अध्यात्म के नये शब्द भी समझा सकती है।

संकट पैदा हो गया कि अगर ऐसा हो गया तो प्रखर चेतना वाले इन्सान क्या हाथ पर हाथ धरे बैठे रहेंगे। क्या उनकी मौलिक सृजनात्मक प्रतिभा के मुकाबले में यह यांत्रिक असाधारण क्षमता अवरोध बनकर खड़ी हो जाएगी? क्या नेताओं के तेज-तर्रार भाषण, नाटकों के चुटीले संवाद, कविताओं के अगले तुक अब चैट जीपीटी देगा? क्या इसकी गुणवत्ता सीमाहीन है। एक बार तो चैट जीपीटी की इस क्षमता ने सबको चौंका दिया। बिल्कुल इसी तरह जैसे किंडल के आगमन ने पुस्तक की उपयोगिता पर प्रश्नचिन्ह लगा दिए थे। कहा गया था कि अब पुस्तक का अस्तित्व मिट जायेगा व पत्र-पत्रिकाएं भी अप्रासंगिक हो जाएंगी जबकि ई-संचार माध्यम पर हर किताब, पत्रिका और हर समाचार उपलब्ध है। लेकिन यांत्रिकता तो यांत्रिकता होती है। अभी इसकी सीमा और संभावनाओं पर कई शोध भी होने लगे हैं। पंजाबी यूनिवर्सिटी के पंजाबी विभाग के पंजाबी कंप्यूटर सहायता केन्द्र के अध्यापक ने एक शोध किया जिसने अलग-अलग भाषाओं में चैट जीपीटी की गुणवत्ता पर सवालिया निशान लगा दिए।

नतीजा यह निकला कि अंग्रेजी से हटते ही क्षेत्रीय भाषाओं में एक तो इस सॉफ्टवेयर का अनुवाद मॉडल पूरी तरह से विकसित नहीं और दूसरी बात इसमें जितना गुड़ डालोगे, उतना ही मीठा होगा। अर्थात पत्रकार और कवि

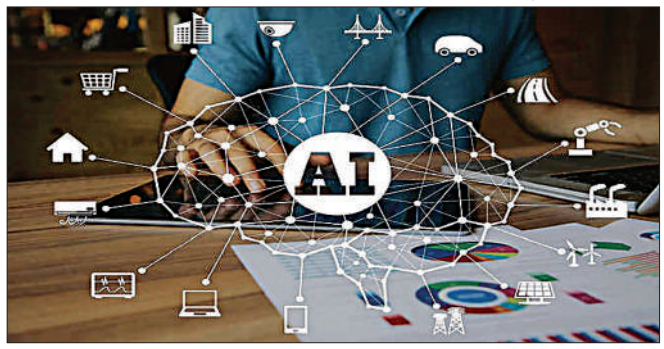

आदि इंटरनेट पर ब्लॉग, विकिपीडिया और वेबसाइट्स पर जितनी अपनी रचनाएं और जानकारी साझा करेंगे उतना ही चैट जीपीटी की उड़ान भी चलेगी। शोधकर्ताओं ने बताया कि अन्य भाषाओं में पूछे गए छोटे उत्तरों वाले सवालों में अगर 80 फीसदी उत्तर सही आते हैं तो बड़े प्रश्न वाले उत्तर में 8 फीसदी तक ही उत्तर सही आ पाते हैं। इतिहास, सेहत, खेल, कंप्यूटर, गणित, करंट अफेयर, भाषा विज्ञान और पर्यावरण विज्ञान के प्रश्न-पत्र डालकर यह परीक्षा ली गई। पंजाबी व हिंदी-अंग्रेजी के 300 नमूनों के सवाल डाले गए। चैट जीपीटी ने 67 फीसदी, 80 फीसदी व 98 फीसदी अंक हासिल किए। इसी तर्ज पर पंजाबी भाषा के कंप्यूटर ज्ञान विषय में अकाल यूनिवर्सिटी तलवंडी साबो में केवल 8 प्रतिशत अंक हासिल हुए। यह बात अन्य डिजिटल प्रयोगों में भी महसूस की गई है। देखा गया है कि पंजाबी और अन्य क्षेत्रीय भाषाओं के मॉडल पूरी तरह विकसित नहीं होते हैं। इंटरनेट पर पंजाबी की पाठ्य सामग्री की कमी के कारण पंजाबी के बड़े सवालों के जवाब में प्रदर्शन खराब हो जाता है। इसलिए अगर चैट जीपीटी को भारत के लिए उपयोगी बनाना है तो भारत की क्षेत्रीय भाषाओं व हिंदी और पंजाबी आदि में भी पूरा ज्ञान और पाठ्य सामग्री अपलोड करनी पड़ेगी, नहीं तो जवाब असंबद्ध आने लगेंगे। यही बात गूगल के प्रयोग में भी देखी गई है। गूगल का भी हर जवाब सही नहीं होता, अगर उसमें नवीनतम जानकारी नहीं डाली जाती है। बेशक कृत्रिम बुद्धिमत्ता उपकरणों के लिहाज से पिछले दिनों में रोबोट का इस्तेमाल भी बहुत प्रचलित हुआ है लेकिन रोबोट भी दो तरह के देखे गए। एक तो वे रोबोट जिनको आप निर्दिष्ट निर्देशों का पालन करने के लिए सिखाते हैं। वे केवल उतना ही करते हैं जितना उनकी यांत्रिकता में शामिल है। अब कृत्रिम बुद्धि का समावेश भी रोबोट में करने की कोशिश की जा रही है।

यह कोशिश जितनी सफलता हासिल कर सकेगी, उतना ही रोबोट हर क्षेत्र में उपयोगी होगा। लेकिन भारत जैसे देश में, जहां आबादी 140 करोड़ के आसपास जाकर चीन को पछाड़ दुनिया की सबसे बड़ी आबादी बनने जा रही है, वहां आधुनिक रोबोट क्या इंसानी रोजगार की जगह नहीं ले लेंगे। पहले ही भारत में काम करने योग्य व्यक्ति को रोजगार नहीं मिलता।

अखंड भारत का सपना देखना गलत नहीं है

डॉ. पवन सिंह मलिक

अखंड भारत हमारे लिए केवल शब्द नहीं है। यह हमारी श्रद्धा, भाव, देशभक्ति व संकल्पों का अनवरत प्रयास है जिसे प्रत्येक देशभक्त जीवंत महसूस करता है। हम इस भूमि को माँ मानते हैं और पुत्रवत इस भूमि की सेवा के लिए सदैव तत्पर रहते हैं। हम कहते भी है माताभूमि पुत्रोहंपृथिव्या। इसलिए माँ का प्रत्येक कष्ट हमारा अपना कष्ट है और एक माँ खंडित रहे कष्ट में रहे, यह उसके पुत्र कैसे स्वीकार कर सकते हैं। समय-समय पर भारत खंडित कैसे हुआ, कौन सी गलतियां हमसे हुईं। वो कौन से कारण रहे जिन्होंने इसकी पृष्ठभूमि लिखी इन सबका चिंतन, विभाजन की पीड़ा व पुन: अखंड होने का विश्वास व संकल्प ही इसका एक मात्र हल है। जब भारत की लाखों आँखों में पलने वाला यह अखंड भारत का सपना करोड़ों-करोड़ों हृदयों की धड़कन बन कर धड़कने लगेगा, तभी यह संभव होगा।

अखंड भारत का स्वप्न कुछ लोगों को असंभव लगता हो। लेकिन यदि हम इतिहास का अवलोकन करेंगे, तो ध्यान आएगा कभी जो बातें असंभव लगा करती थी, कुछ समय के पश्चात वो संभव भी हुआ है। मनुष्य की उम्र कुछ वर्ष हुआ करती है पर देशों की उम्र हजारों-हजारों वर्ष होती है। विश्व के ऐतिहासिक अनुभव हैं कि किसी भी देश का विभाजन स्थाई अथवा अटल नहीं होता। 1905 का बंग भंग, पुन: 1911 में एक हो गया। 2000 वर्ष पूर्व नष्ट इजराइल,मई 1948 में फिर से स्वतंत्र राष्ट्र बना। 'होली रोमन एम्पायर' शीघ्र नष्ट हो गया। न पवित्र रहा, न रोमन और न एम्पायर। विशाल ब्रिटिश साम्राज्य भी स्थाई न रहा। जर्मनी का विभाजन 1945 में, परन्तु 1989 में पूर्वी जर्मनी व पश्चिम जर्मनी को विभाजित करने वाली बर्लिन की दीवार गिरा दी गई, जर्मनी पुन: एक हो गया। दोनों वियतनाम एक हो गये। सोवियत संघ से 15 मध्य एशियाई देश अलग होकर पुन: स्वतंत्र राष्ट्र बन गये। 1947 में ही भारत का पहला व आखिरी विभाजन नहीं हुआ। वरिष्ठ पत्रकार देवेंद्र स्वरूप ने बहुत स्पष्ट शब्दों में कहा है कि भारत की सीमाओं का संकुचन 1947 से काफी पहले शुरू हो चुका था।

सातवीं से नवीं शताब्दी तक लगभग ढाई सौ साल तक अकेले संघर्ष करके हिन्दू अफगानिस्तान इस्लाम के पेट में समा गया। हिमालय की गोद में बसे नेपाल, भूटान आदि जनपद अपनी भौगोलिक स्थिति के कारण मुस्लिम विजय से बच गए। अपनी सांस्कृतिक अस्मिता की रक्षा के लिए उन्होंने राजनीतिक स्वतंत्रता का मार्ग अपनाया पर अब वह राजनीतिक स्वतंत्रता संस्कृति पर हावी हो गयी है। श्रीलंका पर पहले पुर्तगाल, फिर हालैंड और अन्त में अंग्रेजों ने राज्य किया और उसे भारत से पूरी तरह अलग कर दिया। यद्यपि श्रीलंका की पूरी संस्कृति भारत से गए सिंहली और तमिल समाजों पर आधारित है। दक्षिण पूर्वी एशिया के हिन्दू राज्य क्रमश: इस्लाम की गोद में चले गए किन्तु यह आश्चर्य ही है कि भारत से कोई सहारा न मिलने पर भी उन्होंने इस्लामी संस्कृति के सामने आत्मसमर्पण नहीं किया।

इस्लामी उपासना पद्धति को अपनाने के बाद भी उन्होंने अपनी संस्कृति को जीवित रखा है और पूरे विश्व के सामने इस्लाम के साथ सह अस्तित्व का एक नमूना पेश किया। किन्तु मुख्य प्रश्न तो भारत के सामने है। तेरह सौ वर्ष से भारत की धरती पर जो वैचारिक संघर्ष चल रहा था उसी की परिणति 1947 के विभाजन में हुई। पाकिस्तानी टेलीविजन पर किसी ने ठीक ही कहा था कि जिस दिन आठवीं शताब्दी में पहले हिन्दू ने इस्लाम को कबूल किया उसी दिन भारत विभाजन के बीज पड़ गए थे। इसे तो स्वीकार करना ही होगा कि भारत का विभाजन हिन्दू-मुस्लिम आधार पर हुआ। पाकिस्तान ने अपने को इस्लामी देश घोषित किया। वहां से सभी हिन्दू-सिखों को बाहर खदेड़ दिया। अब वहां हिन्दू-सिख जनसंख्या लगभग शून्य है। विभाजन के नैरेटिव का मायाजाल विभाजन के कारणों की समीक्षा करने पर ध्यान आता है कि तात्कालिक नेतृत्व के मनों में भारत बोध का अभाव व राष्ट्र और भारतीय संस्कृति के बारे में भ्रामक धारणा थी। अंग्रेज अपनी चाल में सफल हुए और उनके द्वारा स्थापित बात की भारत कभी एक राष्ट्र नहीं रहा और न है बल्कि यह तो अनेक राज्यों का मिश्रण है। उस समय देश के अधिकतर नेता भी इन्हीं बातों में आकर उन्हीं की भाषा बोलने लगे। श्री सुरेंद्र नाथ बनर्जी द्वारा लिखी पुस्तक 'A Nation in Making' का शीर्षक भी इसी बात की और इशारा करता है। अंग्रेजों ने उस समय एक और नैरेटिव स्थापित करने का प्रयास किया और उसमें भी उन्हें सफलता मिली की जैसे मुसलमान व वे बाहर से आये हैं वैसे ही आर्य भी बाहर से आये हैं और वही अब हिंदू के नाम से जाने जाते हैं।

समय-समय पर देश हित को पीछे छोड़ मुस्लिम तुष्टीकरण की नीति ने भी विभाजन की बात को ओर हवा देने का काम किया। तुष्टीकरण के नाम पर भारत के मान बिंदुओं से समझौता किया गया। फिर चाहे वो करोड़ों देशवासियों में देशभक्ति के भाव को बढ़ाने वाला गीत 'वंदे मातरम' के विरोध की बात हो, राष्ट्रीय ध्वज के रूप में भगवा रंग व चरखे को न मानने की बात हो, राष्ट्रीय जनसम्पर्क की भाषा के रुप में हिंदी को न स्वीकार करने की बात हो, गोहत्या बंदी की मांग का विरोध हो या फिर अनेक महापुरुषों का महत्व कम किये जाने की बात हो। इन मानबिन्दुओं पर होते आघात के कारण हिन्दुओं की आस्था के केंद्र बिंदु कम होते चले गए व मुस्लिम समाज में भी अलगाव बढ़ता गया। विदेशी आक्रांताओं ने समय-समय पर भारत पर हमले कर हमें पराधीन करने का प्रयास किया। हम पराधीन भी हुए, लेकिन कभी भी हमने पराधीनता स्वीकार नहीं की।

हरियाली तीज

प्राचीन शिव मंदिरों के करें दर्शन

श्रावण मास जारी है। यह माह भगवान शिव का बहुत प्रिय माना जाता है। सावन में शिव जी की उपासना की जाती है और शिव मंदिरों के दर्शन कर पूजा अर्चना करते हैं। सावन के महीने में हरियाली तीज, नागपंचमी जैसे त्योहार मनाए जाते हैं। यह पर्व भी भगवान भोलेनाथ से जुड़े हुए हैं। इस मौके पर देशभर के शिव मंदिरों में भव्य आयोजन होते हैं। मंदिर में भक्तों की भीड़ लगती है, जो भगवान भोलेनाथ को प्रसन्न करने के लिए जलाभिषेक और पूजा अर्चना करने यहां पहुंचते हैं। इस वर्ष हरियाली तीज 19 अगस्त को है। हरियाली तीज के मौके पर शिव मंदिरों के दर्शन के लिए जा सकते हैं। भारत के कुछ प्राचीन और अद्भुत शिव मंदिरों में दर्शन करने का प्लान बनायें।

काशी विश्वनाथ ज्योतिर्लिंग, बनारस

दो दिन का वक्त है तो उत्तर की पवित्र नगरी बनारस जा सकते हैं। बनारस को काशी या वाराणसी के नाम से भी जाना जाता है। यह बाबा विश्वनाथ का धाम है। बनारस में गंगा नदी के पश्चिम घाट पर सातवें ज्योतिर्लिंग काशी विश्वनाथ का मंदिर है। मान्यता है कि यह शहर शिव जी के त्रिशूल पर टिका है। हरियाली तीज या नागपंचमी के मौके पर काशी विश्वनाथ मंदिर में काफी भीड़ हो सकती है।

तुंगनाथ मंदिर, गढ़वाल

दुनिया का सबसे ऊंचा शिव मंदिर तुंगनाथ मंदिर है, जो कि उत्तराखंड के गढ़वाल के रुद्रप्रयाग जिले में स्थित है। महादेव के पंच केदारों में से एक यह मंदिर चारों ओर से बर्फ से ढका रहता है।

जटोली मंदिर सोलन

हरियाली तीज वीकेंड पर मनाया जा रहा है और इसके बाद सोमवार को नागपंचमी है। अगर आपके पास तीन दिन का वक्त है और परिवार या दोस्तों संग किसी ट्रिप पर जाने की इच्छा है तो एशिया के सबसे ऊंचे शिव मंदिर के दर्शन के लिए जा सकते हैं। यह मंदिर हिमाचल प्रदेश के सोलन शहर से करीब सात किलोमीटर दूर है। एशिया के सबसे ऊंचे शिव मंदिर का नाम जटोली मंदिर है। मंदिर को दक्षिण द्रविड़ शैली से बनाया गया है।

शंगचुल महादेव मंदिर, कुल्लू

महाभारत काल से हिमाचल प्रदेश के कुल्लू के शांघड़ गांव में एक प्राचीन शिव मंदिर है, जो शंगचुल महादेव के नाम से मशहूर है। शंगचुल महादेव मंदिर का सीमा क्षेत्र करीब 100 बीघा का मैदान है। जैसे ही इस सीमा में कोई प्रेमी युगल पहुंचता है वैसे ही उसे देवता की शरण में आया हुआ मान लिया जाता है। यहां भागकर आए प्रेमी युगल के मामले जब तक सुलझ नहीं जाते तब तक मंदिर के पंडित प्रेमी युगलों की खातिरदारी करते हैं।

हंसना मना है

दादी को गीता पढ़ते देख पोते ने अपनी मां से पूछा, मां दादी कौन की परीक्षा की तैयारी कर रही हैं? मां : बेटा ये फाइनल ईयर की तैयारी कर रही हैं?

पति अपनी बीवी को हॉस्पिटल ले गया और नर्स से कहा: अगर लड़का हो तो कहना कि टमाटर हुआ है। अगर लड़की हो तो कहना प्याज हुई है..! इत्तेफाक से लड़का-लड़की दोनों जुड़वा हो जाते हैं। और नर्स कन्फ्यूजन में बाहर आकर बोली..सर बधाई हो 'सलाद' हुआ है..!

एक बार एक कलेक्टर, एक एसपी, एक मंत्री और एक शिक्षाकर्मी बैठे बातें कर रहे थे। कलेक्टर: हम तो इलाके के मालिक होते हैं। जिससे जो मर्ज़ी करवा लें। एसपी: हम जिसे चाहे अंदर करके ठोक दें। हमारा भी बड़ा रौब होता है। मंत्री: हमारा तो जलवा है बॉस।।। हम चाहे कुछ भी करें, कोई माई का लाल कुछ नहीं बोल सकता। शिक्षाकर्मी: हमारा तो जी कोई रौब नहीं होता। सारा दिन बच्चों को मुर्गा बना के कूटते हैं। आगे सालों की मर्ज़ी, कलेक्टर बनें, एसपी बनें, या नेता।

दो चूहे पेड़ पर बैठे थे, नीचे से एक हाथी गुजरा। एक चूहा हाथी पर गिर गया। तभी दूसरा चूहा बोला, दबा कर रख साले को, मैं भी आता हूं।

कहानी | तीन साधू

एक औरत अपने घर से निकली, उसने घर के सामने सफेद लम्बी दाढ़ी में तीन साधू-महात्माओं को बैठे देखा। वह उन्हें पहचान नहीं पायी। उसने कहा, मैं आप लोगों को नहीं पहचानती, बताइए क्या काम है? हमें भोजन करना है। साधुओं ने बोला। कृपया मेरे घर में पधारिये और भोजन ग्रहण कीजिये। क्या तुम्हारा पति घर में है? नहीं, वह कुछ देर के लिए बाहर गए हैं। औरत ने उत्तर दिया। तब हम अन्दर नहीं आ सकते, तीनो एक साथ बोले। थोड़ी देर में पति घर वापस आ गया, उसे साधुओं के बारे में पता चला तो उसने तुरंत अपनी पत्नी से उन्हें पुनः आमंत्रित करने के लिए कहा। वह साधुओं के समक्ष गयी और बोली, जी, अब मेरे पति वापस आ गए हैं, कृपया आप लोग घर में प्रवेश करिए! हम किसी घर में एक साथ प्रवेश नहीं करते। ऐसा क्यों है? औरत ने अचरज से पूछा। मध्य में खड़े साधू ने बोला, पुत्री मेरी दायीं तरफ खड़े साधू का नाम 'धन' और बायीं तरफ खड़े साधू का नाम 'सफलता' है, और मेरा नाम 'प्रेम' है। अब जाओ और अपने पति से विचार-विमर्श करके बताओ की तुम हम तीनों में से किसे बुलाना चाहती हो। औरत अन्दर गयी और अपने पति से सारी बात बता दी। पति बेहद खुश हो गया। चलो जल्दी से 'धन' को बुला लेते हैं, उसके आने से हमारा घर धन-दौलत से भर जाएगा। औरत बोली, क्यों न हम सफलता को बुला लें, उसके आने से हम जो करेंगे वो सही होगा। तुम्हारी बात भी सही है, पर इसमें मेहनत करनी पड़ेगी, मुझे तो लगता ही धन को ही बुला लेते हैं। पति बोला। थोड़ी देर उनकी बहस चलती रही पर वो किसी निश्चय पर नहीं पहुच पाए, अंततः निश्चय किया कि वह साधुओं से यह कहेंगे कि धन और सफलता में जो आना चाहे आ जाये। औरत की बात सुनकर साधुओं ने एक दूसरे की तरफ देखा और बिना कुछ कहे घर से दूर जाने लगे। अरे! आप लोग इस तरह वापस क्यों जा रहे हैं? पुत्री, दरअसल हम तीनो साधू इसी तरह द्वार-द्वार जाते हैं, और हर घर में प्रवेश करने का प्रयास करते हैं, जो व्यक्ति लालच में आकर धन या सफलता को बुलाता है हम वहां से लौट जाते हैं, और जो अपने घर में प्रेम का वास चाहता है उसके यहां बारी- बारी से हम दोनों भी प्रवेश कर जाते हैं। इसलिए इतना याद रखना कि जहां प्रेम है वहां धन और सफलता की कमी नहीं होती। ऐसा कहते हुए धन और सफलता नामक साधुओं ने अपनी बात पूर्ण की।

7 अंतर खोजें

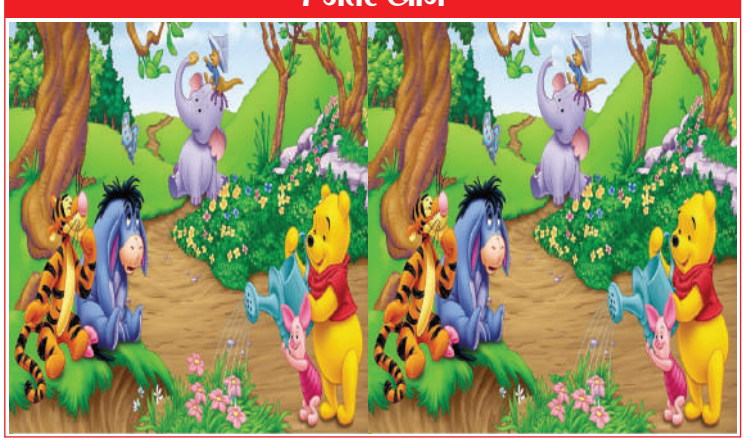

जानिए कैसा रहेगा कल का दिन

पंडित संदीप आत्रेय शास्त्री

लेखक प्रसिद्ध ज्योतिषविद हैं। सभी प्रकार की समस्याओं के समाधान के लिए कॉल करें-9837081951

मेष — उत्साहवर्द्धक सूचना मिलेगी। भूले-बिसरे साथियों से मुलाकात होगी। फालतू खर्च होगा। बड़ा काम करने का मन बनेगा। कारोबार में लाभ होगा।

वृषभ — चोट व रोग से बाधा संभव है। झंझटों में न पड़ें। दुष्टजन हानि पहुंचा सकते हैं। यात्रा लाभदायक रहेगी। भेंट व उपहार की प्राप्ति होगी। कारोबार में वृद्धि होगी।

मिथुन — विवाद को बढ़ावा न दें। फालतू खर्च पर नियंत्रण रखें। कुसंगति से बचें। घर-परिवार की चिंता रहेगी। स्वास्थ्य का ध्यान रखें। किसी व्यक्ति के उकसाने में न आएं।

कर्क — डूबी हुई रकम प्राप्त हो सकती है, प्रयास करें। व्यावसायिक यात्रा सफल रहेगी। निवेशादि मनोनुकूल लाभ देंगे। नौकरी में प्रभाव बढ़ेगा। व्यापार में लाभ बढ़ेगा।

सिंह — योजना फलीभूत होगी। कार्यस्थल पर परिवर्तन संभव है। सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। मित्रों का सहयोग कर पाएंगे। निवेश शुभ रहेगा।

कन्या — कानूनी अड़चन दूर होकर स्थिति मनोनुकूल रहेगी। कारोबार में वृद्धि के योग हैं। धन प्राप्ति सुगम होगी। नौकरी में चैन रहेगा। लंबे समय से रुके कार्यों में गति आएगी।

तुला — बुरी खबर मिल सकती है, धैर्य रखें। स्वास्थ्य का पाया कमजोर रहेगा। काम करने की इच्छा नहीं होगी। विवाद से क्लेश संभव है। बनते कामों में बाधा उत्पन्न होगी।

वृश्चिक — स्वास्थ्य का ध्यान रखें। उत्साह की अधिकता तथा व्यस्तता रहेगी। राजकीय बाधा दूर होगी। कारोबार ठीक चलेगा। महत्वपूर्ण निर्णय लेने में जल्दबाजी न करें।

धनु — स्थायी संपत्ति में वृद्धि हो सकती है। प्रॉपर्टी के कामकाज बड़ा लाभ दे सकते हैं। निवेश शुभ रहेगा। नौकरी में प्रशंसा मिलेगी। रोजगार मिलेगा।

मकर — रचनात्मक कार्य पूर्ण व सफल रहेंगे। पार्टी व पिकनिक का आयोजन होगा। आय में वृद्धि होगी। परीक्षा व साक्षात्कार में सफलता प्राप्त होगी। व्यस्तता रहेगी।

कुम्भ — विवाद को बढ़ावा न दें। किसी व्यक्ति के व्यवहार से स्वाभिमान को ठेस पहुंच सकती है। दु:खद समाचार मिल सकता है। बेकार बातों की तरफ ध्यान न दें।

मीन — मेहनत का फल पूरा-पूरा मिलेगा। यात्रा लाभदायक रहेगी। सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। मित्रों का सहयोग कर पाएंगे। बड़ा काम करने का मन बनेगा।

बॉलीवुड | मन की बात

फिल्म इंडस्ट्री में किसी ने मेरी मदद नहीं की : लव सिन्हा

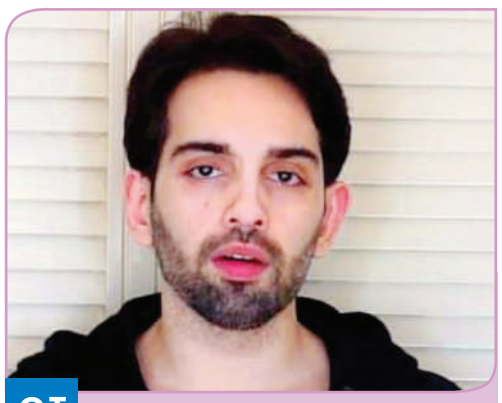

अनिल शर्मा की डायरेक्टेड फिल्म गदर-2 में शत्रुघ्न सिन्हा के बेटे लव सिन्हा भी नजर आए। इसमें वह सिमरत कौर के भाई का रोल निभा रहे हैं। हालांकि स्क्रीन टाइम ज्यादा नहीं मिला है। वह साइड में ही नजर आ रहे हैं। यहां तक कि डायलॉग्स भी नाम मात्र के। इन्होंने साल 2010 में सदियां से डेब्यू किया था। हालांकि बात बन नहीं पाई थी। तब से आज तक करियर ठप्प ही रहा है। वह अपने पिता और बहन की तरह इंडस्ट्री में अपनी धाक नहीं जमा पाए। मीडिया से बातचीत करते हुए एक इंटरव्यू के दौरान लव सिन्हा ने अपनी जर्नी और पिता शत्रुघ्न सिन्हा के बारे में बात की। लव ने खुलासा किया कि उनके पिता ने इंडस्ट्री में कई बड़े लोगों की मदद की थी। लेकिन उनकी मदद किसी ने नहीं की। सोनाक्षी सिन्हा के भाई और एक्टर लव ने बताया कि उनके पापा दूसरे को ये जानते हुए भी मौका देते हैं कि वो गलत कर रहा है। इंडस्ट्री में कई बड़े लोग हैं जिनकी मदद उन्होंने की लेकिन उनके बेटे को ही किसी ने हेल्प नहीं की। इतना ही नहीं, लव ने इस दौरान उस पल को भी याद किया कि कोई उनके परिवार का बेहद करीबी था। उसने लव को एक्टिंग वर्कशॉप में देखा भी था और उनकी एक्टिंग टीजर से बात करते हुए भी देखा था। चाहते तो वो काम दे सकते थे लेकिन ऐसा नहीं किया। लव सिन्हा ने आगे कहा कि कई सारे एक्टर्स ने कई फ्लॉप फिल्में दी हैं लेकिन उनको ज्यादा मौके भी मिले हैं। लेकिन शत्रुघ्न सिन्हा के बेटे के साथ ऐसा नहीं हुआ। उन्हें दूसरा मौका खुद को साबित करने का नहीं मिला। इसके अलावा उन्होंने अपनी बहन सोनाक्षी सिन्हा के बारे में भी बात की। कहा कि एक्ट्रेस इस बात का अंदाजा नहीं लगा सकती कि कौन फेक है और कौन रियल। वह लोगों के इरादों से बेखबर है। इसलिए उसे इस बात पर नजर रखनी चाहिए कि वह किस तरह के लोगों से मिलती है।

अभिषेक की फिल्म घूमर देख अमिताभ बच्चन हुए इमोशनल

अभिषेक बच्चन और सैयामी खेर की आगामी फिल्म घूमर को देखने के बाद बॉलीवुड मेगास्टार अमिताभ बच्चन बेहद भावुक हो गए। इसको लेकर अमिताभ ने एक ब्लॉग लिखा, जिसमें उन्होंने बताया कि वह फिल्म देखकर अपने आंसू नहीं रोक पाए। अमिताभ ने अपने ब्लॉग में लिखा, फिल्म घूमर को रविवार दोपहर और रात में दो बार देखा। इसका उल्लेख करना मुश्किल है। पहले ही फ्रेम से आंखों से पानी बहने लगा। जब फिल्म में अपनी संतान शामिल होती है, तो यह पल थोड़ा ज्यादा भावुक हो जाता है। उनके विचारों, शब्दों और कार्यों से आश्चर्य होता है जो बहुत प्यारा और आकर्षक है।

अमिताभ ने बताया कि फिल्म की भावनाएं क्रिकेट से जुड़ी हैं। यह एक लड़की और उसकी महत्वाकांक्षा की कहानी है। अमिताभ ने कहा, इसमें दिखाया गया है कि खेल का प्रभाव सिर्फ खेल पर ही नहीं पड़ता, बल्कि पूरे परिवार पर पड़ता है। आर। बाल्की ने बेहद ही सरल तरीके से हमारे सामने एक सबसे जटिल विचार बुना है।

इसके बाद उन्होंने लिखा, मैं जानता हूं कि एक हारने वाला क्या महसूस करता है और क्या अनुभव करता है। मैं जानना चाहता हूं कि एक विजेता क्या महसूस करता है और क्या अनुभव करता है। हममें से प्रत्येक ने अपने जीवन में किसी न किसी बिंदु पर विफलता का सामना किया है, और हम जानते हैं कि यह कैसा लगता है। यह वह चुनौती है जिसका हम सभी सामना करते हैं। हम सभी इसके लिए प्रयास करते हैं। हम सभी इसके लिए संघर्ष करते हैं, और फिर जब हम पाते हैं कि दरवाजा बंद है, तो हम इसे तोड़ देते हैं और प्रवेश करते हैं। यही सीखने का आदर्श है। घूमर की कहानी एक प्रतिभाशाली बल्लेबाज अनीना के इर्द-गिर्द घूमती है जो एक दुर्घटना में अपना दाहिना हाथ खो देती है।

विवेक रंजन अग्निहोत्री की द वैक्सीन वॉर का टीजर रिलीज

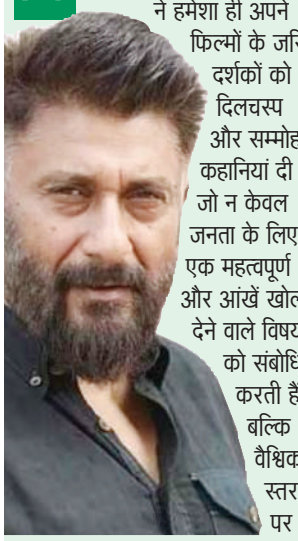

बॉलीवुड | मसाला

विवेक रंजन अग्निहोत्री और अभिनेता-निर्माता पल्लवी जोशी ने हमेशा ही अपने फिल्मों के जरिए दर्शकों को दिलचस्प और सम्मोहक कहानियां दी हैं, जो न केवल जनता के लिए एक महत्वपूर्ण और आंखें खोल देने वाले विषय को संबोधित करती हैं, बल्कि वैश्विक स्तर पर देश का नाम भी रोशन करती हैं। इस सिलसिले को जारी रखते हुए, अब उन्होंने आखिरकार 15 अगस्त, स्वतंत्रता दिवस के शुभ अवसर पर अपनी आगामी बहुप्रतीक्षित फिल्म द वैक्सीन वॉर का टीजर लेकर आए हैं।

जब से विवेक रंजन अग्निहोत्री ने अपनी फिल्म द वैक्सीन वॉर की घोषणा की तब से ही फिल्म को लेकर दर्शकों का उत्साह लगातार बढ़ता जा रहा है। फिल्म वैज्ञानिकों की जीत और 130 करोड़ देशवाशियों के बारे में हैं। फिल्म के टीज़र को रिलीज किया गया है, यह एक अत्यधिक तकनीकी-उन्नत प्रयोगशाला के दृश्य के साथ खुलता है जहाँ वैक्सीन तैयार की जाती है। दूसरी ओर वैज्ञानिकों की टीम को लिफ्ट की ओर चलते हुए दिखाया गया है जो टीकों के विकास में एक प्रमुख लेकिन गुप्त प्रगति को दर्शाता है।

फिल्म के टीजर को रिलीज कर दिया गया है। फिल्म में मुख्य किरदार पल्लवी जोशी का पहला लुक सामने आया है, यह वास्तव में स्क्रीन पर एक शक्तिशाली प्रदर्शन की गारंटी देता है। हालांकि टीज़र में फिल्म के बारे में ज्यादा कुछ नहीं दिखाया गया है, लेकिन हर दृश्य और हर फ्रेम पर नजर रखने लायक है, जिससे दर्शकों के बीच और उत्सुकता बढ़ गई है टीजर में सप्तमी, पल्लवी जोशी, नाना पाटेकर और कई कलाकारों को देखा जा सकता है।

अजब-गजब | दुनिया में इकलौता फल

फ्लाइट में इस फल को ले जाने पर है पाबंदी, पकड़े गए तो हो सकती है जेल

एक वक्त था कि हवाई जहाज की यात्रा भी लोगों के लिए सपना हुआ करती थी लेकिन अब माहौल बदल चुका है। लोग अपना समय बचाने के लिए फ्लाइट में यात्राएं करते हैं। हालांकि इससे जुड़े हुए तमाम नियम-कानून सभी को नहीं पता होते हैं और जब मामला कहीं फंस जाता है, तो पता चलता है कि इन नियमों को जानना और उनका पालन करना कितना ज़रूरी है।

अब सामान के वज़न और हैंडबैग को लेकर नियम के बारे में तो हर कोई जानता है लेकिन कई बार उन चीज़ों को लेकर हम अनजान रह जाते हैं, जो फ्लाइट में आपको लेकर नहीं जानी होती हैं। खासतौर पर खाने-पीने की चीज़ों को लेकर बनाए गए रूल्स हमें नहीं पता होते। अब अगर कोई आपसे पूछे कि फ्लाइट में कौन का फल ले जाना मना होता है, तो हर कोई सोचने लग जाएगा। ये सवाल इतना पेंचीदा है कि सुनकर ही आपका दिमाग दौड़ने लगा होगा। आखिर किसी फल को हवाई यात्रा में ले जाने की मनाही क्यों होगी? तो इस सवाल का जवाब ये है कि पूजा-पाठ और अनुष्ठान में ज़रूरी माने जाने वाले नारियल को आप हवाई यात्रा में अपने साथ नहीं

ले जा सकते हैं। इस पर पाबंदी लगाने के पीछे वजह है सूखे नारियल का ज्वलनशील होगा। आप सूखा या साबुत दोनों ही नारियल अपने साथ फ्लाइट में नहीं ले जा सकते हैं। चूंकि कोई भी ज्वलनशील सामान फ्लाइट में नहीं जा सकता, ऐसे में नारियल पर भी पाबंदी लागू होती है। ज्वलनशील पदार्थों की लिस्ट में फ्लाइट में तंबाकू, गांजा, हीरोइन और शराब ले जाने की भी मनाही होती है। इसके अलावा पेपर स्प्रे और छड़ी जैसी चीज़ें भी आप हवाई यात्रा के दौरान नहीं ले जा सकते हैं। रेज़र, ब्लेड, नेल कटर और नेल फाइलर भी चेक इन के दौरान निकलवा दिया जाता है क्योंकि ये औज़ार की कैटेगरी में आते हैं। स्पोर्ट्स आइटम को भी ले जाने पर मनाही होती है। लाइटर, थिनर, माचिस, पेंट जैसी आग पकड़ने वाली चीज़ें भी यात्रा में नहीं ले जाई जा सकती हैं। बिना फ्यूल का लाइटर और ई सिगरेट को कुछ नियमों के तहत ले जाया जा सकता है।

सती माता के श्राप से 135 साल बाद मुक्त हो पाया जमुई जिले का चौहानडीह गांव

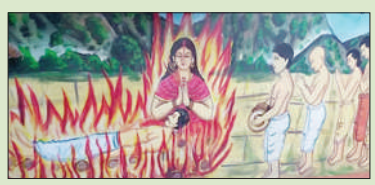

बिहार के जमुई जिला में एक ऐसा अनोखा मंदिर है, जिसके श्राप से लोग 135 साल तक पीड़ित रहे थे। इतना ही नहीं इनके शाप के कारण गांव की कई पीढ़ियां पलायन कर गई। करीब एक शताब्दी के बाद इस गांव के लोगों के ऊपर से शाप का प्रकोप खत्म हुआ है और तब जाकर यहां लोगों के घरों में रौनक देखने को मिल रही है। दरअसल, यह गांव जमुई जिला के खैरा प्रखंड क्षेत्र स्थित चौहानडीह गांव है। जहां माता सती का एक मंदिर है। जिसकी कहानी सती प्रथा से जुड़ी हुई है। स्थानीय ग्रामीणों ने बताया कि 1878 में चौहानडीह गांव में एक महिला अपने पति की मौत के बाद सती हो गई थी। दरअसल, इस गांव के पहले ग्रामवासी मेहताब सिंह के 5 पुत्र थे। उनके सबसे छोटे पुत्र का विवाह एक धार्मिक संपन्न कन्या से हुई थी। उक्त कन्या बचपन से ही धार्मिक प्रवृत्ति की थी। विवाह उपरांत जब वह चौहानडीह गांव आई तो पतिव्रत में तल्लीन हो गई। लेकिन उनके पति का अचानक देहांत हो गया, जिससे गांव में करुण क्रंदन शुरू हो गया। उनकी पत्नी ने पति की चिता पर ही सती होने का निर्णय लिया। गांव के लोगों के समझाने के बाद भी वह नहीं मानी और चिता सजवा कर पति को अपने गोद में लेकर बैठ गई। इधर, कुछ ब्राह्मण कीर्तन-भजन गाने वाले वहां भजन गाना शुरू कर दिया। देखते ही देखते चिता पर बैठने के बाद अचानक अग्नि प्रज्वलित हो गई। ग्रामीणों ने बताया कि पति और पत्नी चिता में एक साथ जलने लगे। इसी बीच एक व्यक्ति ने चिता पर धूमन झोंक दिया, जिससे कि चिता पर बैठी पत्नी ने दुखी होकर कहा कि मैं तुम को श्राप देती हूं, तुम्हारा पूरा परिवार नष्ट हो जाएगा। जिस घर में धन होगा उस घर में संतान नहीं होगी और जिस घर में संतान होगा उस घर में धन नहीं होगा। जिसके बाद यहां बदहाली का दौर शुरू हो गया। स्थिति ऐसी हो गई कि कई वर्षों तक गांव में खुशहाली नहीं आई। नतीजतन लोगों को यहां से पलायन तक होना पड़ा। 135 साल बाद लोग इस शाप से मुक्त हुए। लोगों ने माता सती का एक मंदिर बनाया और उनसे अपने भूल की क्षमा मांगी। आज भी लोग इस मंदिर में प्रतिदिन क्षमा याचना करते हैं और गांव के हर अनुष्ठान से पूर्व इनकी पूजा-अर्चना करते हैं।

मणिपुर में जो करवाया जा रहा है वह खतरनाक : पवार

मोदी पर जमकर बरसे, बोले- कटुता फैलाकर राजनीति बढ़ा रही बीजेपी

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

मुंबई। एनसीपी प्रमुख शरद पवार फिर से महाराष्ट्र के दौरे पर निकले हैं। बुधवार को उन्होंने बीड से अपना दौरा शुरू किया। बीड धनंजय मुंडे का चुनाव क्षेत्र है, जो अजित पवार के साथ बीजेपी सरकार में शामिल हो चुके हैं। इस दौरे में शरद पवार के निशाने पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी रहे पवार ने मणिपुर के मुद्दे को लेकर मोदी की जमकर खिंचाई की। शरद पवार ने कहा कि देश में सुख और शांति के लिए बीजेपी को केंद्र से बेदखल करना ही होगा। शरद पवार बीजेपी, पीएम मोदी और केंद्र सरकार पर जमकर बरसे।

शरद पवार ने आरोप लगाया कि प्रधानमंत्री मोदी मणिपुर में स्थिति को इतना महत्वपूर्ण नहीं मानते हैं कि वहां का दौरा किया जाए। मणिपुर जाने के बजाय उन्होंने मध्य प्रदेश में चुनावी सभाओं को संबोधित करने को प्राथमिकता दी। पवार ने कहा कि पूर्वोत्तर क्षेत्र महत्वपूर्ण और संवेदनशील है। चीन की सीमा से लगे इलाकों पर ज्यादा ध्यान देने की जरूरत है। पूर्वोत्तर में जो कुछ हो रहा है और करवाया जा रहा है, वह देश के लिए बेहद खतरनाक है। मणिपुर इसका उदाहरण है। पवार ने आरोप लगाया कि बीजेपी कटुता फैलाकर ही अपनी राजनीति को आगे बढ़ाना चाहती है। मणिपुर में जो हिंसा हो रही है, उसके लिए बीजेपी की विचारधारा ही जिम्मेदार है। दो दिन पहले ही मनसे प्रमुख राज ठाकरे भी खुलेआम शरद पवार पर मोदी परस्त राजनीति करने का आरोप लगा चुके हैं। राज ठाकरे तो यह भी कह चुके हैं कि एनसीपी की एक टीम तो बीजेपी के साथ जा ही चुकी है, अब दूसरी टीम भी जल्द ही जाएगी। उनका इशारा भी शरद पवार के बीजेपी के साथ जाने की तरफ है। ऐसे में लाजमी है कि शरद पवार इन चर्चाओं और आशंकाओं को निराधार साबित करने के लिए पूरी ताकत से मोदी और बीजेपी का विरोध करें और उन्होंने वही किया भी है।

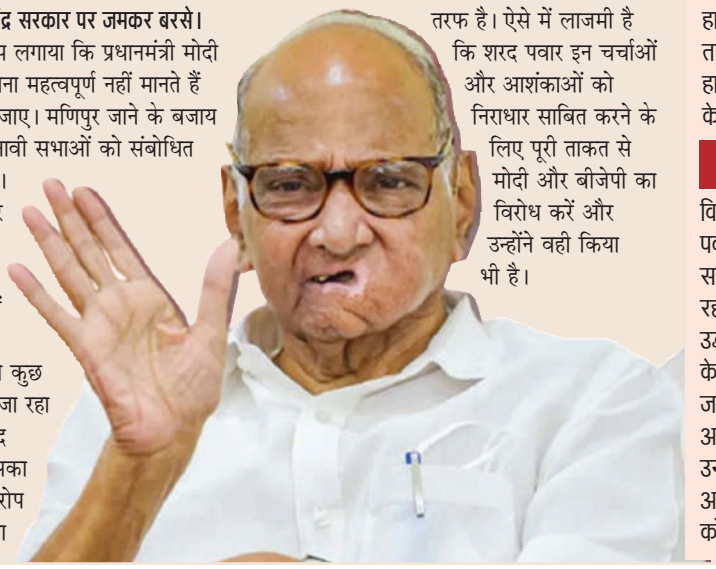

मोदी की सत्ता में वापसी नहीं

2024 में वापस सत्ता में आने की प्रधानमंत्री मोदी की लाल किले से की गई घोषणा की तुलना शरद पवार ने 2019 में देवेंद्र फडणवीस द्वारा की गई मी पुन्हा येइन वाली घोषणा से की। उन्होंने कहा कि मोदी चाहे जितना जोरों से चिल्ला कर सत्ता में अपनी वापसी का ऐलान कर लें, लेकिन उनकी हालत भी देवेंद्र फडणवीस की घोषणा की तरह ही होगी। सच तो यही है कि देश के हालात और जनमत का झुकाव नरेंद्र मोदी के खिलाफ ज्यादा दिख रहा है।

मैं पूरी तरह विपक्ष के साथ

विपक्षी गठबंधन इंडिया के बारे में शरद पवार ने कहा कि वह पूरी तरह विपक्ष के साथ हैं। उनको लेकर जो भ्रम फैलाया जा रहा है, वह निराधार है। इस बारे में उनकी उद्धव ठाकरे से बात हुई है। उनके बीजेपी के साथ जाने की खबरें जानबूझकर फैलाई जा रही हैं। उन्होंने बताया कि वह भतीजे अजित पवार को आगाह कर चुके हैं कि उनका गुट मेरे फोटो का इस्तेमाल न करे। अगर ऐसा हुआ, तो वह उनके खिलाफ कोर्ट में भी जा सकते हैं।

अजित दादा और पवार साहब के बीच वैचारिक विरोध रहेगा : सुले

एनसीपी नेता सुप्रिया सुले ने कहा कि उन्हें इस बात की जानकारी नहीं है कि पिछले सप्ताह पुणे के एक उद्योगपति के घर पर शरद पवार और अजित पवार के बीच क्या बातचीत हुई थी। दरअसल कोरेगांव पार्क क्षेत्र में 12 अगस्त को उद्योगपति अतुल चोरडिया के घर पर राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी संस्थापक शरद पवार और उनके भतीजे और महाराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री अजित पवार के बीच एक बैठक हुई थी। बारामती से लोकसभा सदस्य सुले ने कहा कि वह बैठक में मौजूद नहीं थीं और उन्हें इस बारे में कोई जानकारी नहीं है कि वहां क्या हुआ था। सुप्रिया सुले ने कहा कि दादा (अजित पवार) के जन्म से पहले भी पवार और चोरडिया परिवारों के बीच अच्छा संबंध था क्योंकि (अतुल) चोरडिया के पिता और पवार साहब कॉलेज में एक साथ थे। इसलिए, अगर दोनों परिवार मिलते हैं तो इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं है। कांग्रेस की महाराष्ट्र इकाई के अध्यक्ष नाना पटोले ने मंगलवार को कहा था कि यह उनकी पार्टी के लिए चिंता की बात है कि शरद पवार और अजित पवार गुप्त रूप से मुलाकात कर रहे हैं।

किसानों का दर्द क्या समझेगी भाजपा : लोकेश शर्मा

» बोले- बदहाल नहीं, खुशहाल है राजस्थान का किसान

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

जयपुर। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष सीपी जोशी के ट्वीट पर दिए गए बयान पर सीएम अशोक गहलोत के ओएसडी लोकेश शर्मा ने पलटवार किया है, जिसमें जोशी ने राजस्थान में किसान को बदहाल बताया था। लोकेश शर्मा ने कहा- बदहाल नहीं, खुशहाल है किसान।

सीएम अशोक गहलोत के विशेषाधिकारी लोकेश शर्मा ने भाजपा प्रदेश अध्यक्ष और सांसद सीपी जोशी को जवाब देते हुए लिखा- बदहाल नहीं, खुशहाल किसान! गहलोत सरकार ने किसानों के लिए ऐतिहासिक कार्य किए हैं। सरकार बनते ही 20.77 लाख किसानों का 15,500 करोड़ का ऋण माफ किया है। हर महीने 2000 यूनिट मुफ्त बिजली से बड़ी संख्या में किसानों के बिजली बिल शून्य हो गए। किसानों के लिए पहली बार कोई सरकार अलग से डेडिकेटेड बजट लाई, सिंचाई में जल की उपलब्धता के लिए करोडों रुपए के कार्य हुए हैं। कृषि मिशनों के उत्साहजनक परिणाम आ रहे हैं। लेकिन, किसान विरोधी कानून लाने वाली पार्टी किसानों का दर्द क्या समझेगी? जिन्होंने 2022 तक किसानों की आय दोगुनी करने का शगूफा फेंका, वो किसान की परेशानी क्या समझेंगे?

भाजपा प्रदेशाध्यक्ष सीपी जोशी का ट्वीट

बीजेपी प्रदेश अध्यक्ष सीपी जोशी ने ट्वीट कर एक वीडियो पोस्ट किया और लिखा- बदहाल किसान! गहलोत सरकार ने किसानों को बिजली, पानी, खाद, बीज और फसलों पर एमएसपी समेत सभी सुविधाओं के लिए तरसाया है।

हिमाचल : भूस्खलन से 71 की मौत, 13 लापता

7.5 हजार करोड़ के नुकसान का अनुमान, सीएम बोले - पुनर्निर्माण बहुत बड़ी चुनौती

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

शिमला। हिमाचल प्रदेश में बारिश की आफत आई हुई है और पिछले दिनों राज्य में पहाडों के दरकने के दिल दहला देने वाले दृश्य सामने आए हैं। पिछले 2 दिनो से पहाड़ियों पर बने घर ताश के पत्तो की तरह ढह रहे हैं। दो-तीन मंजिला बने घरों पर बारिश और भूस्खलन आफत बनकर गिरे और उन घरों का नामोनिशान तक न रहा। पिछले 3 दिनों में हिमाचल में 71 लोगो की जान जा चुकी है, 7.5 हजार करोड़ का नुकसान हुआ है. हालात ऐसे हैं कि नुकसान का ये आंकड़ा बढ़ भी सकता है।

मौसम विभाग के अनुमान के अनुसार, राज्य में अगले कुछ दिनों तक बारिश होने की संभावना है। हिमाचल प्रदेश में बारिश के कारण पिछले तीन दिनों से हालात बेहद खराब हैं, 71 लोगों की जान जा चुकी है और 13 लोग अभी भी लापता हैं।

मुख्यमंत्री सुखविंदर सिंह सुक्खू ने बुनियादी ढांचे के पुनर्निर्माण के काम को 'पहाड़ जैसी चुनौती करार दिया है। हिमाचल प्रदेश के शिमला में समर हिल के समीप शिव मंदिर के मलबे से एक और महिला का शव बरामद होने के साथ ही बारिश से जुड़ी घटनाओं में जान गंवाने वाले 57 लोगों के शव अब तक बरामद हुए हैं, अधिकारियों ने यह जानकारी दी।

मलबे से अब भी निकाले जा रहे शव

अधिकारियों ने बताया कि भूस्खलन और बाढ़ के कारण ढही इमारतों के मलबे से बुधवार को और शव निकाले जाने के बाद मरने वालों की संख्या बढ़ गई, हिमाचल प्रदेश में रविवार से हो रही भारी बारिश के कारण शिमला के समर हिल, कृष्णा नगर और फागली इलाकों में भूस्खलन हुए थे, प्रमुख सचिव (राजस्व) ओंकार चंद शर्मा ने कहा,पिछले तीन दिनों में कम से कम 71 लोगों की मौत हो चुकी है और 13 अभी भी लापता हैं, रविवार रात से अब तक 57 शव बरामद किए जा चुके हैं।

11 महीने बाद बुमराह ने बहाया नेट्स पर पसीना

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

आयरलैंड के खिलाफ कल टीम का करेंगे नेतृत्व

डबलिन। चोटिल होने के कारण 11 महीने तक बाहर रहने वाले भारत के शीर्ष तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह ने भारतीय नेट्स पर पूरी तेजी और कौशल के साथ गेंदबाजी की। इस 29 वर्षीय तेज गेंदबाज ने भारत की तरफ से अंतिम मैच 25 सितंबर 2022 को ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ हैदराबाद में टी20 के रूप में खेला था। इसके बाद पीठ की चोट के कारण वह बाहर रहे और उन्हें ऑपरेशन करवाना पड़ा।

बुमराह ने तब बहुप्रतीक्षित वापसी की जब उन्हें आयरलैंड के खिलाफ शुक्रवार से डबलिन में शुरू होने वाले तीन टी20 अंतरराष्ट्रीय मैचों की श्रृंखला के लिए भारतीय टीम का कप्तान नियुक्त किया गया। भारतीय टीम मंगलवार को आयरलैंड पहुंची और उसके एक दिन बाद ही उसने अभ्यास शुरू कर दिया। भारतीय क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआई) ने एक्स (पूर्व में ट्विटर) पर एक वीडियो जारी किया है जिसमें बुमराह अपनी पूरी क्षमता से गेंदबाजी कर रहे हैं जो एशिया कप और विश्वकप से पहले भारतीय टीम के लिए अच्छी खबर है। बुमराह ने दाएं हाथ के बल्लेबाज को अपने तीखे बाउंसर से परेशान किया। इस कारण बल्लेबाज को नीचे झुक कर वह गेंद छोड़नी पड़ी। बाएं हाथ के बल्लेबाज को उन्होंने यार्कर से परेशान किया। बुमराह का नेट पर किया गया यह प्रदर्शन राष्ट्रीय क्रिकेट अकादमी में की गई उनकी कड़ी मेहनत के नतीजे के रूप में देखा जा सकता है। भारतीय टीम में एक अन्य तेज गेंदबाज प्रसिद्ध कृष्णा भी शामिल हैं। वह भी चोटिल होने के कारण लंबे समय तक बाहर रहने के बाद वापसी कर रहे हैं।

विश्वकप के लिए इंग्लैंड टीम में बेन स्टोक्स भी शामिल

5 अक्टूबर से शुरू होने वाले वर्ल्डकप 2023 के लिए इंग्लैंड ने अपनी 15 सदस्यीय टीम का ऐलान कर दिया है। इस स्क्वॉड में टीम के स्टार ऑलराउंडर बेन स्टोक्स भी शामिल हैं। बता दें कि, स्टोक्स ने वनडे क्रिकेट से संन्यास ले लिया था लेकिन अब उन्होंने उसे वापस ले लिया है। बता दें कि, इस साल वनडे वर्ल्डकप की मेजबानी अकेले भारत करेगा। जो कि 5 अक्टूबर से 19 अक्टूबर तक खेला जाएगा। ओपनिंग मैच डिफेंडिंग चैंपियन इंग्लैंड को ही खेलना है। इंग्लैंड न्यूजीलैंड के खिलाफ अहमदाबाद के नरेंद्र मोदी स्टेडियम में खेला जाएगा। पिछला वर्ल्ड कप इंग्लैंड की मेजबानी में 2019 में खेला गया था। जिसे इंग्लैंड ने न्यूजीलैंड को हराकर पहली बार खिताब अपने नाम किया था। उस सीजन में भी बेन स्टोक्स असली हीरो साबित हुए थे। उन्होंने अकेले दम पर कीवियों को परास्त कर अपनी टीम को चैंपियन बनाया था।

नियमों को दरकिनार कर चलाया जा रहा लवी-शुभ हॉस्पिटल

आजाद अधिकार सेना ने की जांच की मांग

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। राजधानी लखनऊ में रिहाइशी इलाकों में व्यवसायिक काम होना आम बात है। कुछ को लखनऊ विकास प्राधिकरण की तरफ से अनुमति है तो कुछ वहां पर बाबूओं की सेटिंग करके अपनी कमाई कर रहें। शहर के बहुत से पॉश इलाकों में बड़े-बड़े डॉक्टरों के क्लिनीक व अस्पताल बने हुए है, जो मानकों को दरकिनार कर बनाए गए हैं।

यहीं नहीं इन अस्पतालों की वजह से वहां आस-पास रहने वाले लोगों को भी कई परेशानियों का सामना करना पड़ता है। अब इसी तरह की शिकायत राजधानी के गोमतीनगर स्थित प्रतिष्ठित लवी शुभ हॉस्पिटल की मुख्यमंत्री से की गई है।

अमिताभ ठाकुर ने सीएम को लिखा पत्र

आजाद अधिकार सेना के राष्ट्रीय अध्यक्ष अमिताभ ठाकुर ने नियमों का उल्लंघन कर लवी शुभ हॉस्पिटल चलाये जाने के आरोपों की जांच की मांग की है। उन्होंने इसके लिए मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को पत्र भेजा है। मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश को भेजी अपनी शिकायत में उन्होंने जानकारी देते हुए बताया कि आवास संख्या बी 3/75, विवेक खंड, गोमती नगर लखनऊ में डॉक्टर शुभ मेहरोत्रा द्वारा दो आवासीय बिल्डिंग को अंदर ही अंदर आपस में जोड़कर यह अस्पताल बनाया गया है, जो आवासीय नियमों का उल्लंघन बताया जाता है। उन्होंने यह भी बताया कि यह अस्पताल स्वास्थ्य विभाग के तमाम अनिवार्य मानकों पर भी खरा नहीं उतरता है, साथ ही अस्पताल के चारों तरफ के लोग भी इसके कारण काफी परेशानी का सामना करते हैं। अमिताभ ठाकुर ने तथ्यों की जांच करा कर नियमानुसार कार्रवाई किए जाने की मांग की है।

अवैध निर्माण वालों पर कई बार की गई कार्रवाई की कोशिश

राजधानी के कई इलाकों में एक तरफ तो अवैध निर्माण धड़ल्ले से हो रहा है, वहीं दूसरी तरफ कई भवन स्वामी ऐसे भी हैं, जो नक्शे के विपरीत अतिरिक्त निर्माण करा रहे हैं। इस कदम को भी अवैध श्रेणी में ही रखा जाता है। एलडीए की ओर से पहले भी कई बार भवन स्वामियों को चेताया जा चुका है अगर नियम विरुद्ध विस्तारीकरण किया जाता है तो इसके खिलाफ सख्त एक्शन लिया जाएगा। गौरतलब हो कि शिकायत मिलने पर एलडीए ऐसे मकानों को समय-समय पर नोटिस देता रहता है जो रिहाइश क्षेत्रों में व्यवसायिक गतिविधियों पर रोक भी लगाता है परंतु यहां पर वह जैसे आंखे मंदे हुए है। अभी हाल में एलडीए की ओर से राजधानी के सभी इलाकों में ऐसे मकानों को चिन्हित करने का काम शुरू किया गया है, जिन्होंने नियमों को ताक पर रखकर मकान का अतिरिक्त विस्तारीकरण करा लिया है। पहले चरण में करीब 200 मकान चिन्हित किए गए थे, जिन्हें कंपाउंडिंग संबंधित नोटिस जारी किया गया है। वहीं, पूरे शहर में ऐसे मकानों को चिन्हित करने का काम युद्धस्तर पर किया जा रहा है। इस समय गोमतीनगर, गोमतीनगर विस्तार, जानकीपुरम, सीतापुर रोड, कानपुर रोड, अलीगंज समेत कई इलाकों से कंपाउंडिंग संबंधित आवेदन अधिक आ रहे हैं। अभी तक करीब 200 से अधिक आवेदन एलडीए में आ चुके हैं। जबकि इससे पहले 15 से 20 मामलों का निस्तारण भी कराया जा चुका है।

संकल्प पत्र-प्रबंधन समिति में वसुंधरा का नाम गायब

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

जयपुर। राजस्थान बीजेपी प्रदेशाध्यक्ष सीपी जोशी ने राजस्थान विधानसभा चुनाव को लेकर संकल्प पत्र घोषणा और चुनाव प्रबंधन समिति की घोषणा की है। बीजेपी के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा के निर्देश पर यह घोषणा हुई। इसमें पूर्व सीएम वसुंधरा राजे का नाम शामिल नहीं किया गया है। संकल्प पत्र कमेटी में केंद्रीय मंत्री अर्जुनराम मेघवाल को संयोजक बनाया गया है। सांसद घनश्याम तिवाड़ी, किरोड़ीलाल मीणा, राष्ट्रीय मंत्री अल्का गुर्जर, प्रभुलाल सैनी, राखी राठौड़ को सह संयोजक बनाय गया है।

सदस्य के रूप में सुशील कटारा, हिमांशु शर्मा, रतन गाडरी, रामगोपाल सुधार, प्रभु बडालिया, जसवंत विश्नोई, अशोक वर्मा, सीएल मीणा, ममता शर्मा, प्रकाश माली, श्याम सिंह चौहान, मानक चतुर्वेदी, सरदार जसवीर सिंह और डॉ एसएस अग्रवाल को जगह मिली है। वहीं, चुनाव प्रबंधन समिति में नारायण पंचारिया को अध्यक्ष बनाया गया है। राज्यवर्धन सिंह राठौड़, सीएम मीणा, कन्हैयालाल बैरवा, राजेंद्र सिंह शेखावत और आनंद शर्मा को सह संयोजक बनाया गया है।

सरकार ने करवाई हिंसा : खाप

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

दादरी (हरियाणा)। नूंह हिंसा के बाद बिगड़े माहौल को देखते हुए दादरी जिले की तमाम खापों ने वीरवार को समुदाय विशेष के लोगों के साथ बैठक की। बैठक में खाप पदाधिकारियों ने आश्वस्त करते हुए कहा कि अगर अब समुदाय विशेष के साथ ज्यादती हुई तो दादरी की तमाम खापें उनके साथ खड़ी हो जाएंगी।

खाप पदाधिकारियों ने स्पष्ट कहा कि नूंह हिंसा राजनैतिक रोटियां सेकने के लिए करवाई गई है। दरअसल, वीरवार को समुदाय विशेष के लोगों के साथ जिले की

खापों के पदाधिकारियों की दो बैठक हुईं। एक बैठक सांगवान खाप-40 की अगुवाई में सांगू धाम पर और दूसरी बैठक सर्वजातीय फौगाट खाप-19 की अगुवाई में बाबा स्वामी दयाल धाम पर हुई। सुबह करीब 10 बजे सांगू धाम पर सांगवान खाप-40 सचिव नरसिंह डीपीई की अध्यक्षता में सद्भावना बैठक हुई।

कांग्रेस के राष्ट्रीय प्रवक्ता पवन खेड़ा को मिली जमानत

पीएम मोदी के दिवंगत पिता के लिए की थी टिप्पणी

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के दिवंगत पिता पर अभद्र टिप्पणी करने के आरोपी कांग्रेस के राष्ट्रीय प्रवक्ता पवन खेड़ा को जमानत मिल गई है। सीजेएम ह्रषीकेश पांडेय ने आरोपी को 25-25 हजार की दो जमानतों और एक मुचलका दाखिल करने पर रिहा करने का आदेश दिया।

इससे पहले वकील सुधांशु शेखर त्रिपाठी और प्रवीण कुमार यादव ने पवन खेड़ा की आत्मसमर्पण की अर्जी दी। कोर्ट ने आरोपी को हिरासत में लेने का आदेश दिया। जमानत अर्जी देकर बताया गया कि आरोपी निर्दोष है और मामले में झूठा फंसाया गया है। वहीं, आरोपी ने आश्वासन भी दिया कि जमानत का दुरुपयोग नहीं करेगा। इस पर कोर्ट ने रिहा करने का फरमान सुनाया। मालूम हो कि भाजपा के महानगर अध्यक्ष और एमएलसी मुकेश शर्मा ने हजरतगंज थाने में 20 फरवरी को रिपोर्ट दर्ज कराई थी। इसमें बताया था कि दिल्ली में पवन खेड़ा ने एक प्रेस कॉन्फ्रेंस की, जिसमें पीएम मोदी पर व्यंग्य करते हुए उनके नाम में दामोदर दास की जगह गौतम लगाकर उनके दिवंगत पिता को अपमानित किया। आरोपी ने मजाक उड़ाते हुए कहा कि भले ही नाम में दामोदर दास है, लेकिन कार्य गौतमदास के समान है। आगे आरोप लगाया गया कि प्रधानमंत्री के दिवंगत पिता को गौतम अदाणी से जोड़कर उपहास उड़ाया और जनता की भावनाओं को ठेस पहुंचाया। पुलिस ने विवेचना के बाद आठ अप्रैल को चार्जशीट लगा दी थी।

चांद के और करीब पहुंचा चंद्रयान-3

- प्रोपल्शन मॉड्यूल से अलग हुए लैंडर
- 23 अगस्त को चांद के दक्षिणी ध्रुवीय क्षेत्र पर होगी सॉफ्ट लैंडिंग

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

बेंगलुरु। चंद्रयान-3 के लिए बृहस्पतिवार का दिन बहुत महत्वपूर्ण रहा। आज लैंडर और प्रोपल्शन मॉड्यूल एक-दूसरे से दोपहर में अलग हो गए। इसरो सूत्रों के मुताबिक, अलग होने के बाद लैंडर को डीबूस्ट (धीमा करने की प्रक्रिया) किया जाएगा, ताकि उसे एक कक्षा में स्थापित किया जा सके जहां से पेरिल्यून (चंद्रमा से निकटतम बिंदु) 30 किमी और अपोल्यून (चंद्रमा से सबसे दूर का बिंदु) 100 किमी दूर है।

23 अगस्त को चंद्रमा के दक्षिणी

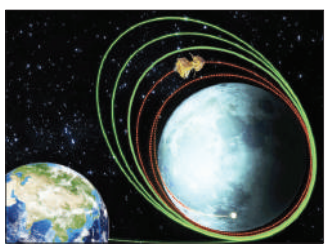

ध्रुवीय क्षेत्र पर सॉफ्ट लैंडिंग का प्रयास होगा। इससे पहले बुधवार को चौथी बार कक्षा बदली गई और वह चंद्रमा की कक्षा में पांचवें और अंतिम चरण में सफलतापूर्वक प्रवेश कर गया। यह चंद्रमा की सतह के और भी करीब आ गया। इसके साथ अंतरिक्षयान ने चंद्रमा से जुड़े अपने सभी युद्धाभ्यास पूरे कर लिए हैं। इसरो ने ट्वीट किया, आज की सफल फायरिंग (जो थोड़े समय के लिए आवश्यक थी) ने चंद्रयान-3 को चंद्रमा की 153 किमी × 163 किमी की कक्षा में स्थापित कर दिया। इसके साथ चांद की ओर बढ़ने के सभी प्रवेश चरण पूरे हुए। अब प्रोपल्शन और लैंडर मॉड्यूल (जिसमें लैंडर और रोवर शामिल हैं) के अलग होने की तैयारी है। 14 जुलाई को श्रीहरिकोटा से रवाना होने के बाद चंद्रयान-3 ने तीन हफ्तों में कई चरणों को पार किया। पांच अगस्त को पहली बार चांद की कक्षा में दाखिल हुआ था। इसके बाद 6, 9 और 14 अगस्त को चंद्रयान-3 ने अलग-अलग चरण में प्रवेश किया। इसरो ने इन तीन हफ्तों में चंद्रयान-3 को पृथ्वी से बहुत दूर स्थित कक्षाओं में स्थापित किया।

चंद्रयान-2 की गलती से लिया है सबक : सोमनाथ

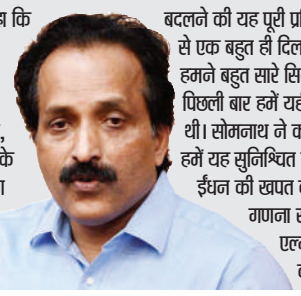

इसरो प्रमुख एस सोमनाथ ने कहा कि इस बार हम चंद्रयान-2 वाली गलती नहीं दोहराएंगे। लैंडिंग प्रक्रिया की शुरुआत में वेग लगभग 1.68 किमी प्रति सेकंड है, लेकिन यह गति चंद्रमा की सतह के क्षैतिज है। यहां चंद्रयान-3 लगभग 90 डिग्री झुका हुआ है, इसे लंबवत होना है तो क्षैतिज से ऊर्ध्वाधर में बदलने की यह पूरी प्रक्रिया गणितीय रूप से एक बहुत ही दिलचस्प गणना है। हमने बहुत सारे सिमुलेशन किए हैं। पिछली बार हमें यहीं पर समस्या हुई थी। सोमनाथ ने कहा, इसके अलावा, हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि ईंधन की खपत कम हो, दूरी की गणना सही हो और सभी एल्गोरिदम ठीक से काम कर रहे हों।

स्वामी 4 पीएम न्यूज नेटवर्क्स प्राइवेट लिमिटेड के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक संजय शर्मा द्वारा आस्था प्रिंटर्स, 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से मुद्रित एवं 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से प्रकाशित। संपादक - संजय शर्मा, विधि सलाहकार: सत्यप्रकाश श्रीवास्तव, मोहम्मद हैदर, वित्तीय सलाहकार: संदीप बंसल, कार्टूनिस्ट: हसन जैदी, दूरभाष: 0522- 4078371 | Email: daily4pm@gmail.com | website: www.4pm.co.in | RNI-UPHIN/2015/62233 डाक पंजी. सं- SSP/LW/NP-495/2018-2020 *इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद लखनऊ न्यायालय के अधीन ही होंगे।